

कहानी: जब तकनीक और अंतरात्मा ने मिलकर लाखों जानें बचाई — चक्रवात फ़ैलिन, ओडिशा (एक सच्ची घटना)

अक्टूबर 1999 में ओडिशा के तट से टकराए **महाचक्रवात** ने लगभग दस हज़ार लोगों की जान ले ली थी। चौदह साल बाद, अक्टूबर 2013 में, उतना ही भयानक एक और चक्रवात — **फ़ैलिन (Phailin)** — बंगाल की खाड़ी में तेज़ी से ओडिशा की ओर बढ़ रहा था। इस बार प्रशासन के सामने एक बड़ी दुविधा थी।

भारत मौसम विज्ञान विभाग के उपग्रह-आधारित मॉडल और पूर्वानुमान बता रहे थे कि चक्रवात गंजाम ज़िले के गोपालपुर के पास टकराएगा। पर तटीय गाँवों के बहुत-से लोग अपना घर, पशु और नावें छोड़ने को तैयार नहीं थे — "पिछली बार भी चेतावनी आई थी, कुछ नहीं हुआ।" ज़बरन निकालना उनकी स्वतंत्रता में दखल लगता था; न निकालना हज़ारों जानों को जोखिम में डालना था। ऊपर से यह डर भी था कि अगर चक्रवात कमज़ोर पड़ गया, तो करोड़ों रुपये के "अनावश्यक" खर्च पर सवाल उठेंगे।

राज्य प्रशासन ने "शून्य जनहानि" को लक्ष्य बनाया। तकनीक ने बताया **कहाँ और कब**; और अधिकारियों की अंतरात्मा ने तय किया कि **किसी भी जान को जोखिम में नहीं छोड़ा जाएगा**। ज़िलाधिकारियों, तहसीलदारों, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं और स्वयंसेवकों ने घर-घर जाकर लोगों को समझाया; बुजुर्गों और दिव्यांगों को सबसे पहले निकाला गया; पशुओं के लिए भी व्यवस्था हुई; और जो किसी भी तरह नहीं माने, उन्हें अंतिम घंटों में दृढ़ता से, पर सम्मान के साथ सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया गया। लगभग **दस लाख लोगों** को चक्रवात-आश्रय-स्थलों और सुरक्षित भवनों में पहुँचाया गया — भारत के इतिहास के सबसे बड़े निकासी अभियानों में से एक।

12 अक्टूबर 2013 की रात फ़ैलिन लगभग 200 से 215 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ़्तार से टकराया। हज़ारों घर उजड़े, पर जनहानि कुछ दर्जन तक सीमित रही — 1999 के दस हज़ार की तुलना में। संयुक्त राष्ट्र सहित दुनिया-भर ने इसे आपदा-प्रबंधन की एक सफल मिसाल माना। इस घटना का संदेश यही है, जो इस अध्याय का भी केंद्रीय भाव है — **तकनीक क्षमता देती है, पर दिशा अंतरात्मा देती है**; और दुविधा के क्षणों में सही निर्णय वही है जो तथ्य, संवेदना और साहस — तीनों को साथ लेकर चले।

🔑 **इस कहानी से सीख:** आपदा जैसी दुविधा में (स्वतंत्रता बनाम जीवन-रक्षा, खर्च बनाम सुरक्षा) तकनीक-आधारित तथ्य और मानवीय अंतरात्मा का मेल ही सर्वोत्तम निर्णय देता है। "शून्य जनहानि" जैसा स्पष्ट नैतिक लक्ष्य पूरी व्यवस्था को एक दिशा में बाँध देता है।

अध्याय 07 — एक नज़र में



चित्र 7.1: अध्याय 07 — एक नज़र में

कहानी: अध्याय की यात्रा — "कलेक्टर ज़ोया का एक दिन: डैशबोर्ड से अंतरात्मा तक"

(यह एक काल्पनिक कहानी है। ज़ोया के दिन का हर पड़ाव इस अध्याय के एक खंड से जुड़ा है।)

सुबह आठ बजे, ज़िला कलेक्टर ज़ोया के दफ्तर की बड़ी स्क्रीन पर **AI डैशबोर्ड** चमक रहा था — कौन-सी योजना कितनी पीछे है, किस अस्पताल में बिस्तर भरे हैं, किस गाँव में पानी की शिकायत है। ज़ोया ने चाय का घूंट लिया और सोचा, "मशीन सब बताती है, पर तय मुझे ही करना है।"

सुबह 9 बजे — चिंताएँ: समीक्षा बैठक में पता चला कि एक विभाग में फ़ाइलें महीनों से इसलिए अटकी हैं, क्योंकि कोई अधिकारी "जोखिम" नहीं लेना चाहता; दूसरे में शिकायतकर्ताओं से रूखा व्यवहार होता है। ज़ोया ने नोट किया — ये उदासीनता, जोखिम-विरोध और जवाबदेही की कमी जैसी **नैतिक चिंताएँ** हैं। (खंड 1)

सुबह 11 बजे — दुविधा: एक विधवा की पेंशन इसलिए रुकी थी कि उसकी आय निर्धारित सीमा से सिर्फ़ कुछ सौ रुपये अधिक दिखाई गई थी। नियम का अक्षर एक ओर, उसकी भावना दूसरी ओर — यह **सही बनाम सही** की दुविधा थी। (खंड 2 और 3)

दोपहर 1 बजे — ALIR की कसौटी: ज़ोया ने अपने निर्णय को चार सवालों पर परखा — क्या मैं जवाबदेह रहूँगी? क्या यह क़ानून के भीतर है? क्या यह ईमानदार है? क्या यह जनता के प्रति उत्तरदायी है? (ये चार सवाल ही ALIR मॉडल हैं — A यानी जवाबदेही (Accountability), L यानी वैधता (Legality), I यानी सत्यनिष्ठा (Integrity) और R यानी संवेदनशीलता (Responsiveness); इसे खंड 4 में विस्तार से समझाया गया है।) फिर उन्होंने तथ्यों की दोबारा जाँच का आदेश दिया। (खंड 4)

दोपहर 3 बजे — टकराव: टेंडर-समिति की फ़ाइल आई — एक बोली लगाने वाली कंपनी में उनके एक पुराने सहपाठी की हिस्सेदारी थी। ज़ोया ने तुरंत लिखित घोषणा करके खुद को उस निर्णय से अलग कर लिया — **हितों के टकराव** का पहला नियम। उसी दिन एक कनिष्ठ अधिकारी ने बताया कि ऊपर से आए एक आदेश को मानने से उसकी **अंतरात्मा** उसे रोक रही है। (खंड 5)

शाम 5 बजे — मशीन की गलती: AI-आधारित लाभार्थी-जाँच ने 300 बुजुर्गों को "डुप्लीकेट" बताकर सूची से हटाने की सिफ़ारिश की थी। ज़ोया ने आदेश दिया — "किसी का नाम बिना भौतिक सत्यापन के नहीं कटेगा।" जाँच में 280 नाम सही निकले — मशीन ने एक जैसे नामों को एक ही व्यक्ति मान लिया था। (खंड 6)

रात 8 बजे — क़ानून और अंतरात्मा: घर लौटते हुए ज़ोया ने सोचा — क़ानून ने उन्हें रास्ता दिखाया, नियमों ने सीमा बताई, पर हर बार अंतिम फ़ैसले में उनकी अंतरात्मा भी बोल रही थी। और AI ने हर बार क्षमता बढ़ाई, पर दिशा उन्होंने खुद तय की। (खंड 7 और 8)

रात 10 बजे — आगे की राह: सोने से पहले ज़ोया ने अपनी डायरी में लिखा — "कल से हर AI सिफ़ारिश पर एक मानवीय हस्ताक्षर, और हर कठिन निर्णय का लिखित कारण।" यही सुरक्षित AI के सूत्रों और नैतिक प्रबंधन का सार है। (खंड 9 और 10)

इस कहानी से सीख: यह अध्याय प्रशासन की नैतिक चिंताओं से शुरू होकर दुविधाओं की पहचान, उनके समाधान के ढाँचे, हितों के टकराव, क़ानून बनाम अंतरात्मा और अंततः कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में मानवीय अंतरात्मा की भूमिका तक जाता है।

ज़ोया का एक दिन — अध्याय के सात पड़ाव



चित्र 7.2: ज़ोया का एक दिन — अध्याय के सात पड़ाव

अध्याय विषय-सूची

- | | | | |
|---|--|----|---|
| 1 | प्रशासन में नैतिक चिंताएँ और चुनौतियाँ — 11 प्रकार | 6 | प्रशासन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI in Administration) |
| 2 | नैतिक दुविधा (Ethical Dilemma) — परिभाषा एवं 3 अनिवार्य शर्तें | 7 | प्रशासन में अंतरात्मा (Conscience in Administration) |
| 3 | नैतिक दुविधाओं के 21 प्रकार | 8 | AI बनाम अंतरात्मा — विस्तृत तुलना |
| 4 | ALIR मॉडल एवं नैतिक दुविधा हल करने के दृष्टिकोण | 9 | भारत AI शासन दिशानिर्देश 2025 (India AI Governance Guidelines) एवं आगे की राह |
| 5 | अंतरात्मा का संकट एवं हितों का टकराव | 10 | नैतिक दुविधाएँ एवं AI — ऐतिहासिक यात्रा |

1. प्रशासन में नैतिक चिंताएँ और चुनौतियाँ — 11 प्रकार

1.1 प्रशासनिक नैतिकता — अर्थ, आयाम और आवश्यकता

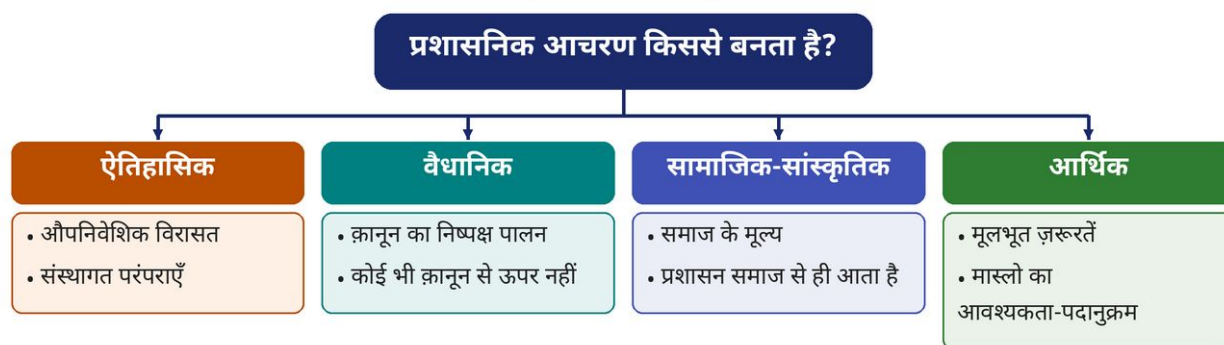
प्रशासनिक नैतिकता (लोक सेवा नैतिकता) का अर्थ है सरकार के प्रशासनिक क्षेत्र में सही आचरण के सिद्धांत और मानक। इसके पाँच आयाम हैं — राजनीति में नैतिकता, विधायिका में नैतिकता, राजनीतिक कार्यपालिका में नैतिकता, स्थायी कार्यपालिका (नौकरशाही) में नैतिकता और नियामक संस्थाओं में नैतिकता। लोक सेवकों को परंपरागत रूप से कुछ सामान्य निर्देश दिए जाते रहे हैं — लोकहित में कार्य करो, राजनीतिक रूप से तटस्थ रहो, गोपनीय सूचना प्रकट मत करो, जनता को कुशल, प्रभावी और निष्पक्ष सेवा दो, हितों के टकराव से बचो और जवाबदेह रहो।

इन निर्देशों की कठिनाइयाँ: (1) इनके अर्थ और व्यवहार में उपयोग को लेकर स्पष्टता की कमी; (2) ये ऊपर से नीचे थोपे गए हैं — प्रभावी होने के लिए नियमों को केवल बाहर से स्वीकार नहीं, बल्कि भीतर से आत्मसात भी किया जाना चाहिए; (3) कई बार ये आपस में टकराते हैं — जैसे निर्णय का बचाव "लक्ष्य-प्राप्ति" से होता है और अनिर्णय का बचाव "नियम-पालन" से; गति, दक्षता और प्रभावशीलता कभी-कभी वस्तुनिष्ठता, जवाबदेही और समानुभूति से समझौता कर लेती हैं; (4) देश के सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक बदलाव के साथ निर्णय के नियमों का निरंतर मूल्यांकन और विकास ज़रूरी है।

प्रशासन में नैतिकता क्यों? — दार्शनिक कारण	वैधानिक-संवैधानिक कारण
सरकार के पक्ष में "सामान्य इच्छा" (रूसो) बनी रहे, वरना जनता सरकार बदल देगी	नीति निदेशक तत्व और मौलिक कर्तव्य — वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और जिज्ञासा की भावना
सामाजिक अनुबंध का दायित्व पूरा करना (हॉब्स, लॉक)	अनुच्छेद 14 — लोक सेवक को निष्पक्ष रहना ही होगा
कर्तव्य-पालन से कर्म सार्वभौमिक बनता है (कांट)	पंथनिरपेक्षता के संवैधानिक मूल्य से सहिष्णुता
अधिकतम लोगों का अधिकतम भला (बेन्थम, मिल)	अनुच्छेद 14 और 15 से वस्तुनिष्ठता और विधि का शासन
समाज में न्याय (रॉल्स)	भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, सूचना का अधिकार अधिनियम — लोक सेवा के मानकों का वैधानिक ढाँचा
सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता और राष्ट्रहित की रक्षा	आचरण संहिता — कार्य और अकार्य, दोनों के लिए जवाबदेही

लोक सेवा के नैतिक दायित्व: निःस्वार्थता, सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, करुणा, समर्पण, शुचिता (Probity), दक्षता, प्रभावशीलता और मितव्ययिता। अर्थात् लोक सेवक को निजी स्वार्थ से ऊपर उठकर, ईमानदार और पवित्र आचरण के साथ, जनता के प्रति करुणा और समर्पण रखते हुए काम करना चाहिए; साथ ही सरकारी संसाधनों का उपयोग ऐसे करना चाहिए कि कम से कम खर्च में (मितव्ययिता) सही काम सही ढंग से (दक्षता) हो और उसका वास्तविक परिणाम भी मिले (प्रभावशीलता)। **नैतिकता के अभाव के परिणाम:** वैधता का क्षय, भरोसे और विश्वसनीयता का टूटना, सामाजिक पूँजी का कमज़ोर होना, विकास की गति धीमी होना और सुशासन का असंभव हो जाना। सरल शब्दों में, जब प्रशासन में नैतिकता नहीं रहती तो जनता की नज़र में सरकार के शासन करने के अधिकार की स्वीकार्यता (वैधता) घटती है, लोग सरकारी संस्थाओं पर भरोसा करना छोड़ देते हैं, समाज में आपसी विश्वास और सहयोग (सामाजिक पूँजी) कमज़ोर पड़ता है, योजनाओं का पैसा भ्रष्टाचार में रिसने से विकास धीमा हो जाता है — और इन सबके कारण सुशासन असंभव हो जाता है।

प्रशासन में नैतिकता के निर्धारक



चित्र 7.3: प्रशासन में नैतिकता के निर्धारक

निर्धारकों की व्याख्या: **ऐतिहासिक कारक** — भारतीय व्यवस्था में भ्रष्टाचार की जड़ें औपनिवेशिक शासन में भी हैं, जबकि कुछ देशों में सार्वजनिक जीवन के उच्च नैतिक मानकों की लंबी परंपरा रही है। **वैधानिक कारक** — क़ानून का निष्पक्ष क्रियान्वयन नैतिक आचरण को बढ़ाता है; जहाँ सर्वोच्च पद भी क़ानून से ऊपर नहीं होता, वहाँ प्रशासन में भी नैतिकता मज़बूत होती है। **सामाजिक-सांस्कृतिक कारक** — प्रशासक वर्ग समाज से ही आता है, इसलिए समाज में प्रचलित मूल्य और व्यवहार प्रशासन में भी झलकते हैं; जाति, लिंग या धर्म के आधार पर भेदभाव की सामाजिक प्रवृत्तियाँ प्रशासन में भी घुस सकती हैं। **आर्थिक कारक** — अमेरिकी मनोवैज्ञानिक अब्राहम मास्लो के आवश्यकता-पदानुक्रम के अनुसार भोजन, आवास और सुरक्षा जैसी बुनियादी ज़रूरतें पूरी होने के बाद ही सम्मान और आत्म-विकास जैसी ऊँची मनोवैज्ञानिक ज़रूरतें आती हैं; इसलिए माना जाता है कि जिस कर्मचारी की बुनियादी ज़रूरतें उचित वेतन से पूरी नहीं होतीं, उसके दबाव या लालच में अनैतिक रास्ता अपनाने की आशंका बढ़ जाती है; पर यह हमेशा सत्य नहीं कि गरीबी अनैतिकता लाती ही है।

जब प्रशासनिक कार्यों में नैतिक सिद्धांतों का उल्लंघन होता है, या जो नैतिक रूप से सही है उससे व्यवहार भटक जाता है, तो उसे 'नैतिक चिंता' (Ethical Concern) कहा जाता है। आज के जटिल प्रशासनिक परिवेश में मुख्य रूप से 11 प्रकार की नैतिक चिंताएँ देखी जाती हैं — हर एक के साथ उसके समाधान के व्यावहारिक प्रयास भी नीचे दिए गए हैं।

नैतिक चिंता	अर्थ	समाधान के प्रयास
1. उदासीनता व करुणा का अभाव (Apathy)	नागरिकों के प्रति संवेदनहीनता — 'आर्मचेयर नौकरशाही' (Armchair Bureaucracy) — दफ्तर में बैठे-बैठे, ज़मीनी हालात जाने बिना काम चलाना।	फील्ड ट्रेनिंग, LBSNAA (मसूरी) / HCM RIPa (जयपुर) जैसे प्रशिक्षण-संस्थानों में प्रशिक्षण, अतिथि व्याख्यान।
2. सत्ता का दुरुपयोग (Abuse of Power)	अधिकारों का व्यक्तिगत लाभ के लिए दुरुपयोग।	360-डिग्री मूल्यांकन, आचार-संहिता (होता समिति, 2004 — सिविल सेवा सुधार), RTI, जन-संपर्क पोर्टल।
3. जोखिम-विरोधी प्रवृत्ति (Risk Aversion)	गलत होने के डर से कोई निर्णय न लेना।	ईमानदार निर्णयों को जाँच से सुरक्षा — भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम की धारा 17A (2018): किसी अधिकारी के आधिकारिक निर्णय पर जाँच से पहले सक्षम प्राधिकारी की पूर्व-अनुमति ज़रूरी (पहले यह सुरक्षा DSPE अधिनियम की धारा 6A में केवल संयुक्त सचिव व ऊपर के अधिकारियों को थी, जिसे 2014 में सर्वोच्च न्यायालय ने रद्द कर दिया); सद्भावनापूर्ण कार्यों की सुरक्षा (जैसे कंपनी अधिनियम 2013 की धारा 456 — सद्भाव में किए गए कार्य के लिए अधिकारी पर मुकदमा नहीं)।
4. भ्रष्टाचार (Corruption)	सार्वजनिक संसाधनों का निजी लाभ हेतु दुरुपयोग।	भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम 1988, K. सन्थानम समिति (1962-64), ई-गवर्नेंस, CBI, CVC, लोकपाल, RTI, PIL, PFMS (सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली) सॉफ्टवेयर, सामाजिक अंकेक्षण।
5. पारदर्शिता की कमी (Poor Transparency)	कार्यप्रणाली में अपारदर्शिता।	ई-ऑफिस, नागरिक चार्टर, जन सूचना पोर्टल (राजस्थान)।
6. कर्तव्य में लापरवाही (Insincerity)	समय पर उपस्थित न रहना, कर्तव्य से बचना।	आधार-सक्षम बायोमेट्रिक उपस्थिति प्रणाली।
7. जवाबदेही का अभाव (Lack of Accountability)	निर्णयों के लिए उत्तरदायित्व से बचना।	भारतीय न्याय संहिता (BNS) व भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (BNSS) 2023 — पुराने आपराधिक कानूनों का सरलीकरण; दिसंबर 2023 में निरसन और संशोधन अधिनियम, 2023 द्वारा कई पुराने कानून निरस्त।
8. क्रोनिज़्म व भाई-भतीजावाद (Cronyism)	राजनीतिक संरक्षण से ठेके व पदोन्नति।	ई-बिडिंग, सिविल सेवा बोर्ड (तबादला/पदोन्नति), केंद्रीय प्रशासनिक अधिकरण (CAT) को मज़बूत करना।
9. सत्यनिष्ठा का अभाव (Lack of Integrity)	नैतिक सिद्धांतों से समझौता।	मिशन कर्मयोगी, लोक सेवा आयोगों के पाठ्यक्रम में नैतिकता, मिशन सत्यनिष्ठा (भारतीय रेलवे — लगभग 12-13 लाख कर्मचारी, 2018 से)।
10. निजता का उल्लंघन (Privacy Concerns)	डेटा का दुरुपयोग व डिजिटल निगरानी।	डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण अधिनियम 2023 (DPDP Act), IT अधिनियम 2000 (2008 संशोधन), IT नियम 2021।
11. खराब कार्यकुशलता (Poor Efficiency)	मूल्यांकन (Appraisal) में पारदर्शिता का अभाव।	SPARROW पोर्टल (Smart Performance Appraisal Report Recording Online Window)।

इन 11 चिंताओं को तीन व्यापक समूहों में बाँटकर समझना आसान है — (1) **रवैये से जुड़ी** (उदासीनता, जोखिम-विरोध, लापरवाही), (2) **सत्ता के दुरुपयोग से जुड़ी** (सत्ता-दुरुपयोग, भ्रष्टाचार, क्रोनिज़्म, सत्यनिष्ठा का अभाव), (3) **पारदर्शिता और दक्षता से जुड़ी** (पारदर्शिता, जवाबदेही, निजता, कार्यकुशलता)।

1.2 भारतीय सिविल सेवाओं के नैतिक मुद्दे — द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग की दृष्टि

आज भारतीय सिविल सेवाओं के अधिकांश नैतिक मुद्दे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से **भ्रष्टाचार** से जुड़े हैं, जो नैतिकता की विफलता की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति है। "करप्ट" शब्द लैटिन "करप्टस" से बना है, जिसका अर्थ है — **तोड़ना या नष्ट करना**; जबकि "एथिक्स" यूनानी "एथिकोस" से, जिसका अर्थ है — **"आदत से उत्पन्न"**। दुर्भाग्य यह है कि बहुतेकों के लिए भ्रष्टाचार ही आदत बन गया है — ऊँचे पदों के "बड़े भ्रष्टाचार" से लेकर आम आदमी के रोज़मर्रा के "खुदरा भ्रष्टाचार" तक। भ्रष्टाचार के दो पहलू हैं — एक, जब किसी संस्था के नियम और प्रक्रियाएँ ही ऐसी बन जाएँ कि

ईमानदार व्यक्ति के लिए भी बिना रिश्त के काम कराना कठिन हो; और दूसरा, जब व्यक्ति स्वयं लालच में अपने पद का दुरुपयोग करे। इन्हें क्रमशः कहा जाता है — **भ्रष्ट संस्था और भ्रष्ट व्यक्ति**।

सिविल सेवाओं के प्रमुख नैतिक मुद्दे	द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग के अवलोकन
सत्ता का असमान वितरण और दुरुपयोग	भ्रष्टाचार विशेषकर नौकरशाही के निचले, जनता से सीधे जुड़े स्तर पर चिंता का विषय है
जवाबदेही का अभाव	नागरिकों की शिकायतों के निवारण के प्रति प्रतिबद्धता की स्पष्ट कमी
राजनीतिक हस्तक्षेप और सांठगांठ	लालफीताशाही और अनावश्यक जटिल प्रक्रियाएँ नागरिकों की कठिनाई बढ़ाती हैं
सत्यनिष्ठा की कमी; भ्रष्ट अधिकारियों पर कार्रवाई का अभाव	सरकारी कर्मचारियों को शायद ही जवाबदेह ठहराया जाता है; उच्च अधिकारियों से शिकायतें अनसुनी रह जाती हैं
व्हिसलब्लोअरों की अपर्याप्त सुरक्षा	कई लोक-सेवकों का रवैया अहंकार और उदासीनता का है
लोक सेवकों की उचित आचार संहिता का अभाव	बार-बार तबादले प्रभावशीलता घटाते और जवाबदेही को कमजोर करते हैं
पारदर्शिता और आम आदमी के प्रति संवेदनशीलता की कमी	कभी-कभी बेईमान राजनेताओं और नौकरशाहों का "अपवित्र गठजोड़" कुशासन की ओर ले जाता है

"नैतिक अवसंरचना" (Ethics Infrastructure) की ज़रूरत: नियम, विनियम और क़ानून लोक सेवकों में निष्पक्षता, ईमानदारी और समर्पण सुनिश्चित करने के लिए हैं, फिर भी प्रशासनिक गतिविधियों का एक विशाल क्षेत्र ऐसा है, जिसे औपचारिक क़ानूनों से नियंत्रित नहीं किया जा सकता — वहाँ अधिकारी केवल **अपनी अंतरात्मा** और लोक-कल्याण के प्रति अपने कर्तव्य-बोध के प्रति जवाबदेह होते हैं। इसलिए एक ऐसी "नैतिक अवसंरचना" चाहिए, जो अच्छे आचरण का मार्गदर्शन भी करे और कदाचार को प्रशासनिक तथा क़ानूनी रूप से दंडित भी करे — इसमें संगठनात्मक सत्यनिष्ठा बढ़ाने वाले उपाय, पारदर्शिता बढ़ाने वाली सूचना तक पहुँच और शक्ति के दुरुपयोग को रोकने वाले तंत्र शामिल हैं।

अमेरिकन सोसाइटी फ़ॉर पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन की आचार संहिता (अमेरिका के लोक प्रशासकों का प्रमुख पेशेवर संगठन) लोक प्रशासकों से अपेक्षा करती है कि वे (1) लोकहित को स्व-हित और संस्थागत निष्ठा से ऊपर रखें, हर प्रकार के भेदभाव और उत्पीड़न का विरोध करें; (2) जनता के "जानने के अधिकार" का सम्मान करें और नीति-निर्माण में नागरिकों को शामिल करें; (3) संविधान और क़ानून का सम्मान करें और समानता, निष्पक्षता, प्रतिनिधित्व, उत्तरदायित्व तथा उचित प्रक्रिया के सिद्धांतों को बढ़ावा दें; (4) ईमानदारी से कर्तव्य निभाएँ, पदोन्नति, सम्मान या निजी लाभ के लिए समझौता न करें, पक्षपात के बिना कार्य करें और दूसरों को उनके काम का श्रेय दें; (5) संगठन की नैतिक क्षमता बढ़ाएँ; और (6) पेशेवर उत्कृष्टता के लिए प्रयास करें।

1.3 नैतिक सुन्नता (Ethical Numbness) — सबसे ख़तरनाक चिंता

नैतिक सुन्नता का अर्थ है — नैतिक मुद्दों को पहचानने या उन पर प्रतिक्रिया देने की क्षमता का घटते जाना। यह तब होता है, जब व्यक्ति या समूह अपने या दूसरों के नैतिक ग़लत कामों के प्रति असंवेदनशील हो जाते हैं। इसके लक्षण हैं — समानुभूति की कमी, पीड़ा के प्रति उदासीनता और वास्तविक नैतिक विश्वास का अभाव। **उदाहरण:** (1) **सड़क दुर्घटना में तमाशबीन प्रभाव (Bystander Effect)** — अनेक घटनाओं में घायल व्यक्ति सड़क पर पड़ा रहता है, क्योंकि लोग डर से या "कोई और मदद करेगा" यह मानकर आगे बढ़ जाते हैं (ज़िम्मेदारी का विसरण); (2) **जाति-आधारित भेदभाव और हाथ से मैला ढोना** — क़ानूनी प्रतिबंध के बावजूद ये प्रथाएँ बनी हुई हैं, क्योंकि वंचित समुदायों का अमानवीकरण समाज के कुछ हिस्सों को उनकी गरिमा और पीड़ा को अनदेखा करने देता है। एक और ख़तरनाक बहाना है — **"सब यही करते हैं"** का तर्क; पर अगर सचमुच सब कुछ ग़लत कर रहे हों, तब भी वह सही नहीं हो जाता।

“सबसे पहले — जानबूझकर किसी को हानि मत पहुँचाओ। (Primum non nocere — Above all, not knowingly to do harm.)” — हिप्पोक्रेटिक शपथ का सिद्धांत, जिसे आधुनिक प्रबंधन-विज्ञान के प्रसिद्ध विचारक पीटर ड्रुकर (Peter Drucker) ने हर पेशे के लिए एकमात्र आवश्यक नैतिकता बताया

11 नैतिक चिंताएँ — तीन समूह



चित्र 7.4: 11 नैतिक चिंताएँ — तीन समूह

2. नैतिक दुविधा (Ethical Dilemma) — परिभाषा एवं 3 अनिवार्य शर्तें

आसान परिभाषा: नैतिक दुविधा (Ethical Dilemma)

परिभाषा: नैतिक दुविधा वह स्थिति है, जब दो या दो से अधिक नैतिक सिद्धांतों/मूल्यों के बीच सीधा टकराव हो और निर्णय लेने वाले व्यक्ति को किसी एक मूल्य को दूसरे की कीमत पर चुनना पड़े — यानी कोई भी विकल्प चुनने पर कुछ न कुछ नैतिक कीमत चुकानी ही पड़ती है।

आसान भाषा में: जैसे एक ट्रेन तेज़ी से आ रही है, एक पटरी पर 1 व्यक्ति बँधा है और दूसरी पटरी पर 5 — आपको लीवर खींचकर ट्रेन की दिशा बदलनी है, तय करना है कि किसे बचाएँ (इसे 'ट्रॉली समस्या' — Trolley Problem कहा जाता है)। अब कल्पना करें कि वह अकेला व्यक्ति स्वयं प्रधानमंत्री हों — क्या निर्णय बदलेगा? और अगर पुल पर खड़े किसी व्यक्ति को धक्का देकर ट्रेन रोकी जा सकती हो, तो क्या वह उचित होगा? — यही असली नैतिक दुविधा है, जहाँ हर विकल्प के साथ एक नैतिक कीमत जुड़ी होती है। **उदाहरण:** एक अधिकारी के सामने जब वरिष्ठ अधिकारी का आदेश और जनहित आमने-सामने आ जाएँ (जैसे किसी गलत परियोजना को तुरंत मंजूरी देने का दबाव), तो वह ठीक ऐसी ही दुविधा में होता है — दोनों तरफ कुछ न कुछ नैतिक मूल्य दांव पर होता है।

नैतिक चिंता बनाम नैतिक दुविधा

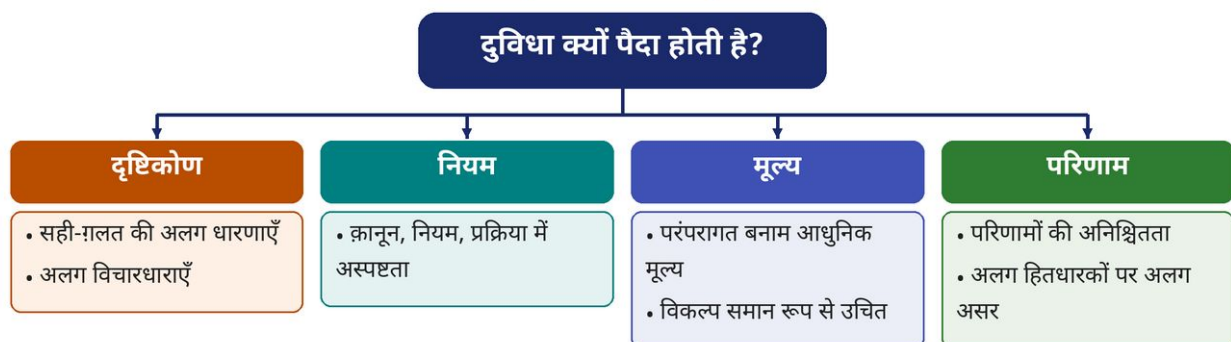
नैतिक चिंता	बनाम	नैतिक दुविधा
एक चेतावनी-बत्ती	स्वरूप	दो "सही" या दो "कम गलत" के बीच मजबूरी का चुनाव
क्या यह सही है या गलत?	प्रश्न	दोनों में से कौन-सा सही?
ऐसी नीति जो अनजाने में पर्यावरण बिगाड़ दे	उदाहरण	बाँध से विकास बनाम आदिवासियों का विस्थापन
गलत को सुधारना	समाधान	एक मूल्य के लिए दूसरे का आंशिक त्याग

चित्र 7.5: नैतिक चिंता बनाम नैतिक दुविधा

दुविधा कब होती है? जीवन में तीन तरह के प्रश्न आते हैं — (1) **सौंदर्य-संबंधी प्रश्न**, जैसे "क्या आपको नीला रंग पसंद है?" — उत्तर पूरी तरह व्यक्तिपरक; (2) **वैज्ञानिक प्रश्न**, जैसे "क्या पृथ्वी चपटी है?" — उत्तर पूरी तरह वस्तुनिष्ठ; और (3) **नैतिक प्रश्न**, जैसे "क्या सार्वभौमिक बुनियादी आय (हर नागरिक को बिना शर्त हर महीने एक निश्चित न्यूनतम राशि देना) लागू होनी चाहिए?" — यहाँ अनेक कसौटियाँ होती हैं: व्यक्तिगत नैतिकता, अंतरात्मा, सामाजिक नैतिकता, धार्मिक नैतिकता, संवैधानिक नैतिकता, अंतरराष्ट्रीय नैतिकता। कई कसौटियों के कारण ही मूल्यों में टकराव होता है और दुविधा जन्म लेती है। अंग्रेज़ी मुहावरे में दुविधा में फँसे व्यक्ति को **"दुविधा के दो सींगों पर"** (On the horns of a dilemma) बैठा कहा जाता है — दोनों में से कोई भी सींग आरामदायक नहीं।

दुविधा आम तौर पर दो समान रूप से सक्षम मूल्यों के बीच होती है — दोनों सकारात्मक या दोनों नकारात्मक। एक सकारात्मक और एक नकारात्मक मूल्य के बीच चुनाव सामान्यतः दुविधा नहीं, क्योंकि वहाँ चुनाव सरल है।

प्रशासन में दुविधा के कारण



चित्र 7.6: प्रशासन में दुविधा के कारण

2.1 नैतिक दुविधा की 3 अनिवार्य शर्तें

शर्त	विवरण	उदाहरण
1. नैतिक कर्ता (Moral Agent)	निर्णय लेने वाला व्यक्ति नैतिक रूप से ज़िम्मेदार होना चाहिए।	एक IAS अधिकारी — जिसने संवैधानिक शपथ ली है, इसलिए उत्तरदायी है।

शर्त	विवरण	उदाहरण
2. विकल्पों की उपलब्धता	कर्ता के पास कम से कम 2 विकल्प व चुनने की वास्तविक क्षमता होनी चाहिए।	RTI के तहत जानकारी देना या न देना — दोनों विकल्प खुले हैं।
3. सिद्धांतों से समझौता	किसी एक विकल्प को चुनने पर कोई न कोई नैतिक मूल्य त्यागना ही पड़ेगा।	जनहित बनाम वरिष्ठ का आदेश — किसी एक से समझौता अवश्यंभावी है।

नैतिक दुविधा की तीन अनिवार्य शर्तें



चित्र 7.7: नैतिक दुविधा की तीन अनिवार्य शर्तें

2.2 नैतिक दुविधा के 3 प्रमुख प्रकार

प्रकार	अर्थ	उदाहरण
निजी हानि दुविधा (Private Cost Dilemma)	सिद्धांत बनाम आत्म-संरक्षण/जीवन-रक्षा।	सत्येंद्र दुबे — सिद्धांत के लिए अपनी जान की कीमत चुकाई (देखें नीचे दी गई सच्ची घटना)।
सही बनाम सही दुविधा (Right vs Right Dilemma)	वफ़ादारी बनाम ईमानदारी — दोनों ही अपने-आप में सही मूल्य हैं।	दिनेश ठाकुर, रैनबैक्सी प्रकरण — कंपनी के प्रति वफ़ादारी बनाम जनता के प्रति ईमानदारी।
संयुक्त नैतिक दुविधा (Conjoint Ethical Dilemma)	साध्य बनाम साधन — अच्छे लक्ष्य के लिए अपनाया गया साधन विवादास्पद हो।	युद्ध में 'सहवर्ती क्षति' (Collateral Damage) की पीड़ा।

📖 सिद्धांत की कीमत — एक सच्ची घटना (सत्येंद्र दुबे)

27 नवंबर 2003 — बिहार के गया शहर में, अपने 30वें जन्मदिन की सुबह, भारतीय इंजीनियरिंग सेवा (IES) के युवा अधिकारी सत्येंद्र दुबे की गोली मारकर हत्या कर दी गई। उनका 'अपराध' सिर्फ इतना था कि उन्होंने स्वर्णिम चतुर्भुज राजमार्ग परियोजना (Golden Quadrilateral Highway Project) में हो रही भारी गड़बड़ियों को सीधे प्रधानमंत्री कार्यालय को पत्र लिखकर उजागर किया था — और गोपनीयता बनाए रखने का अनुरोध करने के बावजूद उनका नाम लीक हो गया। सत्येंद्र दुबे के सामने ठीक वही दुविधा थी, जिससे आज भी अनेक ईमानदार अधिकारी जूझते हैं — 'सिद्धांत बनाम आत्म-संरक्षण' (Principle vs Preservation)। क्या वे चुप रहकर अपनी जान बचाते, या सच बोलकर अपना कर्तव्य निभाते? उन्होंने कर्तव्य को चुना, और अपनी जान की कीमत चुकाई। प्रशासन में ऐसी दुविधाएँ रोज़ आती हैं — कभी छोटी, कभी सत्येंद्र दुबे जैसी विकट। आज के दौर में एक नया आयाम भी जुड़ गया है — कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), जो गति व पैमाने में तो अद्भुत है, पर क्या वह अंतरात्मा की जगह ले सकती है? यही अध्याय इन्हीं दो प्रश्नों — 'सही निर्णय कैसे लें' और 'मशीन बनाम मन' — के इर्द-गिर्द बुना गया है।

नैतिक दुविधा के तीन प्रकार



चित्र 7.8: नैतिक दुविधा के तीन प्रकार

🔍 आसान परिभाषा: नैतिक अवशेष (Moral Residue)

📖 **परिभाषा:** किसी नैतिक दुविधा में सबसे 'सही' विकल्प चुनने के बावजूद भी मन में जो अपराध-बोध या असंतोष बचा रह जाता है, उसे 'नैतिक अवशेष' कहा जाता है — यही चीज़ नैतिक दुविधा को एक सामान्य निर्णय से अलग करती है।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे डॉक्टर को एक ही समय पर आए दो गंभीर मरीज़ों में से किसी एक का ही तुरंत इलाज करना पड़े — भले ही उसने 'सही' मरीज़ चुना हो, दूसरे मरीज़ के प्रति एक हल्की-सी बेचैनी उसके मन में फिर भी बनी रहती है। 🏠 **उदाहरण:** युद्ध में सेना कमांडर द्वारा

किसी सैन्य लक्ष्य पर हमले का 'सही' निर्णय लेने के बावजूद, आम नागरिकों को हुई अप्रत्यक्ष क्षति (Collateral Damage) का दुःख/बेचैनी बने रहना — यह नैतिक अवशेष का उदाहरण है।

लोक नीति में मूल्य-संघर्ष: लगभग हर लोक नीति विवाद में "क्या सही है, क्या गलत; क्या न्यायपूर्ण है, क्या अन्यायपूर्ण" को लेकर अलग-अलग विश्वास होते हैं — अधिकांश नीतिगत निर्णय असल में **प्रतिस्पर्धी मूल्यों के बीच चुनाव** हैं। जैसे — (1) **समान अवसर बढ़ाने** की नीतियों में समानता, विविधता, न्याय, दक्षता, योग्यता और व्यक्तिगत उपलब्धि जैसे मूल्यों में टकराव हो सकता है; (2) **अपराध-निवारण** नीतियों में स्वतंत्रता, सुरक्षा, उचित प्रक्रिया, समता, प्रभावशीलता और न्याय के बीच; और (3) **आंतरिक सुरक्षा** नीतियों में सूचना-साझाकरण, गोपनीयता, निजता, नागरिक स्वतंत्रता, व्यक्तिगत अधिकार और सुरक्षा के बीच।

लोक सेवक की कुछ व्यावहारिक दुविधाएँ: जब वह देखे कि प्रशासनिक विवेकाधिकार का दुरुपयोग हो रहा है, या भ्रष्टाचार और भाई-भतीजावाद चल रहा है — तो क्या वह चुप रहे या "सीटी बजाए" (व्हिसलब्लोइंग करे)? क्या वह किसी दबाव-समूह की गतिविधियों में सक्रिय भाग ले, क्योंकि उसे उनके विचारों से सहानुभूति है? क्या वह दलगत राजनीति में भाग ले, या केवल लोकहित और सार्वजनिक पद के ऊँचे मानकों को बनाए रखे?

नैतिक अवशेष का महत्व: सही निर्णय लेने के बाद भी मन में असहजता बने रहना सामान्य है — यही असहजता दुविधा को किसी सामान्य निर्णय से अलग करती है, और यह बताती है कि छोड़ा गया मूल्य भी महत्वपूर्ण था।

3. नैतिक दुविधाओं के 21 प्रकार

प्रशासनिक जीवन में नैतिक दुविधाएँ कई अलग-अलग रूपों में सामने आती हैं। नीचे 21 सबसे महत्वपूर्ण प्रकार की दुविधाएँ, उनके वास्तविक प्रशासनिक उदाहरणों सहित दी गई हैं — हर प्रकार को याद रखने के लिए दो परस्पर-विरोधी मूल्यों के टकराव के रूप में समझना सबसे आसान तरीका है।

क्र.	दुविधा का प्रकार	प्रशासनिक उदाहरण एवं विश्लेषण
1	सिद्धांत बनाम आत्म-संरक्षण	IES सत्येंद्र दुबे ने राजमार्ग घोटाला उजागर किया, जान गँवाई — सत्याग्रह बनाम सुरक्षा।
2	व्यावसायिक बनाम निजी जीवन	IPS अधिकारी की 24×7 ड्यूटी — परिवार को समय न मिलना — कार्य-जीवन संतुलन की चुनौती।
3	लाभ बनाम सामाजिक ज़िम्मेदारी	किसी विद्युत वितरण कंपनी (DISCOM) के प्रमुख के सामने प्रश्न — घाटा कम करें या निःशुल्क बिजली जारी रखें?
4	प्राथमिकता बनाम गैर-भेदभाव	झारखंड में आधार से न जुड़ने पर राशन कार्ड रद्द होने से एक आदिवासी बालिका को राशन न मिलना, भूख से मृत्यु — नियम बनाम मानवता।
5	दंड बनाम पुरस्कार	यातायात नियम तोड़ने वालों को फूल भेंट करना — साधन (हृदय-परिवर्तन) बनाम साध्य (कानून-पालन)।
6	साध्य बनाम साधन	पुल-निर्माण हेतु किसी पुराने मंदिर को हटाना — बेहतर यातायात बनाम धार्मिक भावनाएँ।
7	स्वायत्तता बनाम जवाबदेही	सतीश धवन ने डॉ. कलाम को SLV-3 (उपग्रह प्रक्षेपण यान) परियोजना में पूरी स्वायत्तता दी — असफलता की ज़िम्मेदारी स्वयं ली।
8	नियम बनाम विवेकाधिकार	नियम: बिना कागज़ात राशन नहीं — विवेकाधिकार: भूखे व्यक्ति को तुरंत राहत देना।
9	वफ़ादारी बनाम ईमानदारी	संस्था/सरकार के प्रति वफ़ादारी बनाम अनियमितताओं को उजागर करना (व्हिसलब्लोइंग)।
10	स्वचालन बनाम रोज़गार	AI व रोबोटिक्स के बढ़ते उपयोग से बड़ी संख्या में नौकरियों पर संकट — तकनीक बनाम मानव-रोज़गार।
11	राष्ट्रीय हित बनाम मानवता	किसी आतंकी को चिकित्सा उपचार देना, या बड़े बाँध हेतु दर्जनों गाँवों का विस्थापन — राष्ट्रीय ज़रूरत बनाम मानवीय पीड़ा।
12	विकास बनाम पर्यावरण/संधारणीयता	मुंबई मेट्रो हेतु आरे वन क्षेत्र में वृक्षों की कटाई — विकास बनाम पर्यावरण-संरक्षण।
13	कानून का अक्षर बनाम भावना	गंभीर मरीज़ को अस्पताल ले जा रही तेज़ रफ़्तार गाड़ी का चालान — नियम (Letter) बनाम जीवन-रक्षा (Spirit)।
14	बाह्य बनाम आंतरिक जवाबदेही	किशोर अपराधी के लिए — बाहरी जवाबदेही (जेल) बनाम आंतरिक ज़िम्मेदारी (पुनर्वास)।
15	गति बनाम सटीकता	मुख्यमंत्री द्वारा 2 महीने में पुल के उद्घाटन का दबाव — सुरक्षा-मानकों से समझौता किए बिना गति बनाए रखना।
16	राष्ट्रीय सुरक्षा बनाम निजता	अंगुली-छाप/नाकॉ टेस्ट लेना — सुरक्षा बनाम अनुच्छेद 21 के तहत निजता का अधिकार।
17	समानता बनाम समता	सरकारी नौकरियों में आरक्षण — समानता (समान व्यवहार) बनाम समता (सकारात्मक भेदभाव/Positive Discrimination)।

क्र.	दुविधा का प्रकार	प्रशासनिक उदाहरण एवं विश्लेषण
18	वरिष्ठ का आदेश बनाम जनहित	वरिष्ठ अधिकारी का त्रुटिपूर्ण आदेश — कनिष्ठ अधिकारी न तो खुला विद्रोह कर सकता है, न ही उसे सही मान सकता है।
19	गोपनीयता बनाम पारदर्शिता	RTI की धारा 8 के तहत राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी जानकारी माँगना — प्रकटीकरण बनाम राज्य-हित।
20	केंद्रीकरण बनाम विकेंद्रीकरण	अति-केंद्रीकरण से थोपे गए निर्णय; अति-विकेंद्रीकरण से अकुशल क्रियान्वयन — दोनों की अपनी सीमाएँ।
21	न्याय बनाम दया	निर्भया कांड में किशोर अपराधी को मात्र 3 वर्ष की सज़ा; ए.जी. पेरारिवलन (राजीव गांधी हत्याकांड) को सुशील आचरण पर रिहाई।

3.1 चार सबसे आम प्रशासनिक दुविधाएँ — उदाहरण सहित

दुविधा	प्रश्न	टकराते मूल्य	उदाहरण
विवेक बनाम नियम (लचीलापन बनाम एकरूपता)	नियम का कठोर पालन करें, या किसी विशेष मामले में करुणामय/न्यायपूर्ण परिणाम के लिए विवेक का प्रयोग?	वैधता/एकरूपता बनाम समानुभूति/वास्तविक न्याय	वास्तव में ज़रूरतमंद व्यक्ति को लाभ से इसलिए वंचित करना कि वह पात्रता की कठोर सीमा से थोड़ा बाहर है
गोपनीयता बनाम पारदर्शिता	राष्ट्रीय सुरक्षा या जारी जाँच की सूचना कब गुप्त रहे, और कब जनता का जानने का अधिकार प्राथमिक हो?	राष्ट्रीय सुरक्षा/दक्षता बनाम जवाबदेही/जन-विश्वास	संवेदनशील रक्षा-सौदे का विवरण सूचना के अधिकार में देना बनाम रणनीतिक गोपनीयता
लोकहित बनाम निजी हित	अधिकारी के निजी वित्तीय या पारिवारिक हित उसके सार्वजनिक कर्तव्य से टकराएँ तो?	सत्यनिष्ठा/वस्तुनिष्ठता बनाम निजी लाभ/निष्ठा	टेंडर-समिति का वह सदस्य, जिसके रिश्तेदार की कंपनी बोली लगा रही है
दक्षता बनाम समता (गति बनाम निष्पक्षता)	तेज़ परिणाम के लिए परियोजना को तेज़ करें, भले उचित प्रक्रिया छूटे या कुछ वर्ग हाशिये पर जाएँ?	प्रदर्शन/विकास बनाम न्याय/समावेश	तेज़ बुनियादी ढाँचा-विकास, जिसमें आदिवासी समुदाय बिना पर्याप्त पुनर्वास के विस्थापित हों

निजता बनाम राष्ट्रीय सुरक्षा — एक समकालीन दुविधा: डिजिटल निगरानी और डेटा-निजता की बहस में सरकारों के सामने एक ओर मज़बूत राष्ट्रीय सुरक्षा और क़ानून-प्रवर्तन (एक सार्वजनिक भलाई) की ज़रूरत है, दूसरी ओर निजता का मौलिक अधिकार (एक नैतिक और संवैधानिक मूल्य)। **डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण अधिनियम, 2023** जैसे क़ानून किसी एक मूल्य की पूर्ण विजय नहीं, बल्कि संतुलन का प्रयास करते हैं। इसी तरह हाई-स्पीड रेल गलियारों या औद्योगिक क्षेत्रों के लिए बड़े पैमाने पर **भूमि-अधिग्रहण** "दक्षता बनाम समता" की दुविधा का उत्कृष्ट उदाहरण है — यह ज़िला प्रशासकों के लिए एक आम नैतिक रणक्षेत्र है।

प्रशासनिक दृष्टि: एक लोक सेवक के लिए नैतिक दुविधाएँ सैद्धांतिक नहीं, बल्कि रोज़ की वास्तविकता हैं। तकनीकी समस्याओं के विपरीत, दुविधाओं का कोई एक स्पष्ट हल नहीं होता — इनमें "धूसर रंगों" के बीच रास्ता निकालना पड़ता है — यानी ऐसी स्थितियों में, जो न पूरी तरह सफ़ेद (सही) हैं और न पूरी तरह काली (ग़लत)। इन मूल्य-संघर्षों को परिभाषित और विश्लेषित न कर पाने से अक्सर **अनिर्णय, मनमाने निर्णय या राजनीतिक रूप से सुविधाजनक रास्ता** चुना जाता है, नैतिक रूप से सही नहीं। **दुविधा को पहचानना ही उसके नैतिक समाधान का पहला क़दम है।**

New India Education by Omkar Sir

कहानी: "नियम की एक रेखा" — पेंशन और पात्रता की दुविधा

बीकानेर ज़िले के एक उपखंड में कमला देवी (काल्पनिक नाम), 68 वर्ष की एक विधवा, की वृद्धावस्था पेंशन अचानक रुक गई। नई जाँच में उनके परिवार की वार्षिक आय पात्रता-सीमा से कुछ सौ रुपये अधिक दर्ज हुई थी, क्योंकि उनके बेटे की एक अस्थायी मज़दूरी को स्थायी आय मान लिया गया था। बेटा अब गुजरात में कहीं काम ढूँढ़ रहा था और माँ से संपर्क भी नहीं था। कमला देवी के पास दवा के पैसे भी नहीं थे।

उपखंड अधिकारी सुनील (काल्पनिक नाम) के सामने दुविधा थी। नियम का अक्षर साफ़ कहता था — आय सीमा से अधिक, तो पेंशन नहीं। पर नियम की भावना थी — असहाय बुजुर्ग को सहारा। कर्मचारी ने कहा — "साहब, एक बार छूट देंगे तो सौ लोग आ जाएँगे।" सुनील जानते थे कि नियम तोड़ना भी ग़लत होगा और आँख मूँदकर उसे लागू करना भी।

सुनील ने तीसरा रास्ता खोजा — तथ्यों की दोबारा, ईमानदार जाँच। पटवारी और ग्राम विकास अधिकारी ने गाँव जाकर पड़ोसियों के बयान लिए, बेटे के पुराने नियोक्ता से पुष्टि की और पाया कि वह आय केवल तीन महीने की अस्थायी मज़दूरी थी, जो अब बंद हो चुकी थी। वास्तविक आय सीमा से काफी कम निकली। सुनील ने लिखित, कारण-सहित आदेश से पेंशन बहाल की, पिछली रुकी राशि भी दिलवाई, और कमला देवी को वृद्धजन-देखभाल योजना और निःशुल्क दवा योजना से भी जोड़ा।

फिर उन्होंने एक स्थायी सुधार भी किया — उपखंड में यह व्यवस्था बनी कि किसी भी लाभार्थी की पेंशन रोकने से पहले उसे सुनवाई का अवसर मिले और अस्थायी आय की जाँच अलग से हो। अगले छह महीनों में ऐसे 37 और मामले सामने आए, जिनमें पेंशन ग़लत ढंग से रुकी थी। सुनील ने प्रशिक्षण में कहा — "नियम की रेखा पार नहीं की, बस यह देखा कि रेखा सही जगह खिंची थी या नहीं।"

इस कहानी से सीख: "विवेक बनाम नियम" की दुविधा में सबसे अच्छा समाधान अक्सर नियम तोड़ना या आँख मूँदकर लागू करना नहीं, बल्कि तथ्यों की ईमानदार पुनः जाँच, सुनवाई का अवसर (प्राकृतिक न्याय) और कारण-सहित लिखित निर्णय होता है। एक व्यक्ति की समस्या से व्यवस्था की कमी पहचानकर उसे सुधारना ही सच्ची लोक सेवा है।

इन 21 प्रकारों को चार व्यापक समूहों में समझना आसान है — (1) व्यक्तिगत मूल्य-टकराव (1, 2, 9, 14), (2) संस्थागत/प्रक्रिया-संबंधी (5, 6, 7, 8, 13, 15, 18, 20), (3) समाज और नीति-स्तरीय (3, 4, 10, 11, 12, 17, 21), (4) सूचना और सुरक्षा-संबंधी (16, 19)। किसी भी वास्तविक स्थिति को इनमें से सही श्रेणी में पहचान लेना ही उसके समाधान की आधी यात्रा है — उसके बाद अगले खंड का ALIR मॉडल रास्ता दिखाता है।

4. ALIR मॉडल एवं नैतिक दुविधा हल करने के दृष्टिकोण

4.1 ALIR मॉडल — नैतिक दुविधा हल करने की 4-चरण प्रक्रिया

आसान परिभाषा: ALIR मॉडल (ALIR Model)

परिभाषा: किसी भी नैतिक दुविधा में उलझे होने पर, निर्णय को चार कसौटियों — जवाबदेही (Accountability), वैधता (Legality), सत्यनिष्ठा (Integrity) व संवेदनशीलता (Responsiveness) — पर परखकर एक संतुलित व व्यावहारिक निर्णय तक पहुँचा जा सकता है।

आसान भाषा में: जैसे किसी नए पुल के डिज़ाइन को मंजूरी देने से पहले एक इंजीनियर उसे चार अलग-अलग जाँचों (भार-क्षमता, सामग्री-गुणवत्ता, लागत, समय-सीमा) से गुज़ारता है — ठीक वैसे ही ALIR मॉडल किसी नैतिक निर्णय को चार कसौटियों से गुज़ारकर परखने में मदद करता है। **उदाहरण:** किसी जटिल भूमि-अधिग्रहण मामले में — अधिकारी पहले देखे कि निर्णय राज्य/जनता के प्रति जवाबदेह है (A), संविधान-सम्मत है (L), उसकी अपनी सत्यनिष्ठा से मेल खाता है (I), और सबसे कमज़ोर पक्ष की ज़रूरतों के प्रति संवेदनशील है (R) — तभी वह निर्णय संतुलित माना जाएगा।

अक्षर	पूरा नाम	अर्थ एवं उपयोग
A	जवाबदेही (Accountability)	राज्य व सरकार के प्रति लोकांतरिक जवाबदेही — नागरिकों के प्रति उत्तरदायी रहना।
L	वैधता (Legality)	संविधान की सर्वोच्चता व न्यायिक नियमों का पालन — कानून की कसौटी पर खरा उतरना।
I	सत्यनिष्ठा (Integrity)	पेशेवर नैतिक सिद्धांतों से दृढ़ता से जुड़े रहना — जैसा मिशन कर्मयोगी में अपेक्षित है।
R	संवेदनशीलता (Responsiveness)	नागरिक-कल्याण के प्रति संवेदनशील रहना — गांधीजी के टैलिज़्मन (सबसे गरीब की कसौटी) की भावना।

ALIR मॉडल — निर्णय की चार कसौटियाँ

ALIR

A — जवाबदेही

क्या मैं इस निर्णय के लिए जवाब दे सकूँगा?

L — वैधता

क्या यह क़ानून के भीतर है?

I — सत्यनिष्ठा

क्या यह ईमानदार और निष्पक्ष है?

R — संवेदनशीलता

क्या यह जनता की ज़रूरत के प्रति उत्तरदायी है?

चित्र 7.9: ALIR मॉडल — निर्णय की चार कसौटियाँ

4.2 नैतिक दुविधा हल करने के 10 दृष्टिकोण (Approaches)

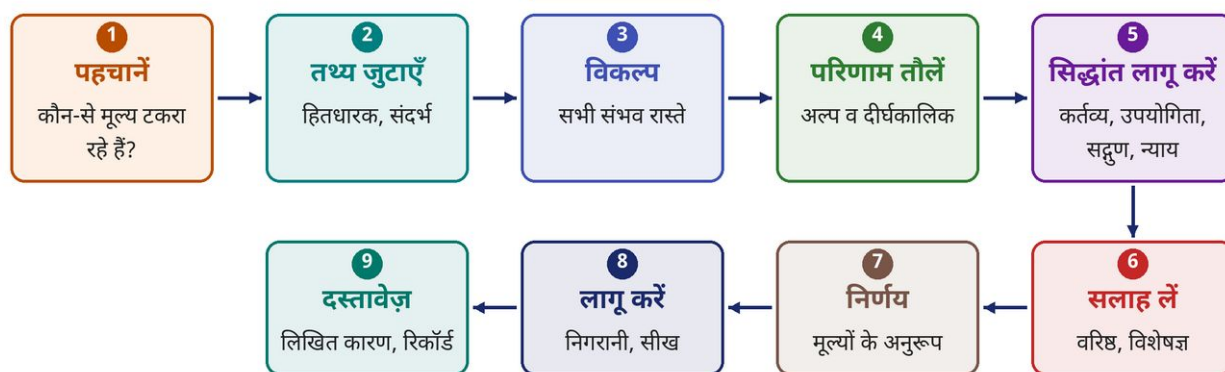
ALIR मॉडल के अतिरिक्त, अलग-अलग नैतिक परंपराओं से निकले 10 दृष्टिकोण भी किसी दुविधा को सुलझाने में सहायक होते हैं — व्यवहार में इन्हें उचित उदाहरण सहित लागू करना निर्णय की गुणवत्ता बढ़ाता है।

दृष्टिकोण	मुख्य विचार	उदाहरण
उपयोगितावादी (Utilitarian)	अधिकतम लोगों का अधिकतम कल्याण (बेन्थम)।	सार्वभौमिक बुनियादी आय (UBI) — सर्वाधिक लोगों को लाभ।
अधिकार दृष्टिकोण (Rights Approach)	हर मनुष्य को गरिमापूर्ण जीवन का अधिकार।	अनुच्छेद 21 — जीवन व गरिमा का अधिकार।
न्याय/निष्पक्षता (Justice/Fairness)	समानों के साथ समान व्यवहार — कोई पक्षपात नहीं (रॉल्स)।	अज्ञानता का आवरण (Veil of Ignorance) — नियम ऐसे बनें, मानो बनाने वाले को अपनी सामाजिक स्थिति ही पता न हो।
सामान्य भलाई (Common Good)	जो समाज के लिए अच्छा है, वही व्यक्ति के लिए भी अच्छा है।	वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना।
सद्गुण दृष्टिकोण (Virtue Approach)	सद्गुणी व्यक्ति का कार्य सदैव नैतिक होता है (अरस्तू)।	भगवान कृष्ण का चरित्र — सद्गुण-आधारित आचरण।
कर्तव्यवादी (Deontological)	परिणाम की परवाह किए बिना कर्तव्य-पालन (कांट)।	सत्येंद्र दुबे — जान देकर भी सत्य का साथ दिया।
नेहरूवादी (Nehruvian)	राष्ट्रीय हित सर्वोपरि।	वैज्ञानिक दृष्टिकोण, पंथनिरपेक्षता।
विवेकानंद दृष्टिकोण	मानव-जाति की सेवा ही अंतिम लक्ष्य।	दरिद्र नारायण की सेवा।
गांधीवादी टैलिज़्मन (Gandhian Talisman)	निर्णय सबसे गरीब व कमज़ोर व्यक्ति के लिए उपयोगी होना चाहिए।	अंत्योदय — अंतिम व्यक्ति को प्राथमिकता।
कानूनी दृष्टिकोण (Legal Approach)	कार्य कानूनी सिद्धांतों का पालन करे, न्यायिक कसौटी पर खरा उतरे।	विधि का शासन (Rule of Law)।

4.3 नैतिक दुविधा हल करने का नौ-चरण ढाँचा

नैतिक दुविधा को हल करने की एक व्यवस्थित प्रक्रिया इस प्रकार है: (1) **दुविधा पहचानें** — कौन-से नैतिक सिद्धांत या मूल्य टकरा रहे हैं, क्या यह दो सही या दो ग़लत के बीच चुनाव है?; (2) **जानकारी जुटाएँ** — निर्णय से पहले सभी तथ्य और परिस्थिति इकट्ठी करें, यह पता करें कि निर्णय से कौन-कौन (हितधारक) प्रभावित होंगे और क्या-क्या परिणाम संभव हैं; (3) **विकल्प सोचें** — हर विकल्प को निष्पक्षता, न्याय और व्यक्ति के सम्मान की कसौटी पर परखें; (4) **परिणाम तौलें** — हर विकल्प के तुरंत होने वाले (अल्पकालिक) और आगे चलकर होने वाले (दीर्घकालिक) परिणाम सोचें और देखें कि कौन किस तरह प्रभावित होगा; (5) **नैतिक सिद्धांत लागू करें** — परखें कि अलग-अलग नैतिक सिद्धांत क्या कहते हैं, जैसे कर्तव्यवाद (मेरा कर्तव्य क्या कहता है), उपयोगितावाद (सबसे अधिक लोगों का भला किसमें है), सद्गुण-नीतिशास्त्र, न्याय-दृष्टिकोण (प्राकृतिक न्याय) और अधिकार-दृष्टिकोण (गांधी का जंतर, क़ानून-नियम-संहिताएँ); (6) **सलाह लें** — कठिन मामलों में अकेले निर्णय लेने के बजाय वरिष्ठ अधिकारियों, विषय-विशेषज्ञों या भरोसेमंद सहयोगियों की राय लें, ताकि कोई पहलू छूट न जाए; (7) **निर्णय लें** — ऊपर के सभी चरणों के आधार पर वह विकल्प चुनें, जो टकराते मूल्यों के बीच सबसे अच्छा संतुलन बनाए और जिसे आप खुलकर उचित ठहरा सकें; (8) **लागू करें और विचार करें** — परिणामों की निगरानी और अनुभव से सीखना; (9) **प्रक्रिया का दस्तावेज़ बनाएँ** — निर्णय-प्रक्रिया और उसके कारणों का रिकॉर्ड, ताकि भविष्य में पारदर्शिता और जवाबदेही बनी रहे।

नैतिक दुविधा का समाधान — नौ चरण



चित्र 7.10: नैतिक दुविधा का समाधान — नौ चरण

4.4 छह प्रश्नों की आत्म-परीक्षा और "अखबार परीक्षण"

नैतिक निर्णय लेते समय लोक सेवक को स्वयं से ये प्रश्न पूछने चाहिए — (1) क्या यह कार्य **क्रानूनी** है और सरकार की नीति के अनुरूप है? (2) क्या यह मेरे विभाग के **लक्ष्यों और आचार संहिता** के अनुरूप है? (3) क्या मुझे लगता है कि यह **सही** है? (4) विभाग, मेरे सहयोगियों, अन्य पक्षों और मेरे लिए इसके **परिणाम** क्या होंगे? (5) क्या मैं इसे **उचित ठहरा** सकता हूँ? (6) यदि इस कार्य की **सार्वजनिक जाँच** हो, यानी कल यह अखबार के पहले पन्ने पर छपे, तो क्या होगा? अंतिम प्रश्न को "**अखबार परीक्षण**" (Newspaper Test) भी कहा जाता है — जो निर्णय सबके सामने सही ठहराया न जा सके, उस पर दोबारा सोचना चाहिए।

निर्णय से पहले छह प्रश्न

मेरा निर्णय



चित्र 7.11: निर्णय से पहले छह प्रश्न

4.5 लोकहित (Public Interest) के चार दर्शन

लोकहित का अर्थ है "सामान्य कल्याण"। सरकार का स्वरूप सार्वभौमिक है — उसे बिना किसी भेदभाव के सामान्य भलाई की सेवा करनी है। प्रशासक लोकहित को किस दृष्टि से देखता है, इसके चार प्रमुख दर्शन हैं:

दर्शन	अर्थ	सीमा
अंतर्ज्ञानवादी (Intuitionist)	संघर्ष की स्थिति में प्रशासक अंतर्ज्ञान से वह विकल्प चुनता है, जो उसे उन परिस्थितियों में सही लगे।	कोई स्पष्ट मार्गदर्शन या लोकहित का स्पष्ट सिद्धांत नहीं देता
पूर्णतावाद (Perfectionism)	समाज के हर क्षेत्र में उत्कृष्टता को बढ़ावा; सार्वजनिक संसाधन ऐसे खर्च हों कि समाज के सर्वश्रेष्ठ सदस्य सबसे अधिक लाभान्वित हों।	अभिजात्यवादी और समानता-विरोधी; लोकतांत्रिक समाज के अनुकूल नहीं
उपयोगितावाद	नीति अधिक से अधिक लोगों को बेहतर बनाए, भले कुछ लोग पीछे रह जाएँ — सामाजिक संतुष्टि का शुद्ध योग बढ़े।	अल्पसंख्यक की अनदेखी का खतरा
न्याय का सिद्धांत (रॉल्स)	हर व्यक्ति को अधिकतम समान बुनियादी स्वतंत्रता; नीतियाँ सबके हित में हों और पद सबके लिए खुले हों।	व्यवहार में लागू करना जटिल

दुविधा सुलझाने का चार-चरण क्रम: सबसे पहले पहचानें कि सामने की स्थिति 21 प्रकारों में से किस प्रकार की दुविधा है। फिर स्पष्ट करें कि दोनों पक्षों में कौन-कौन से मूल्य टकरा रहे हैं। इसके बाद संभावित निर्णय को ALIR मॉडल की चार कसौटियों (जवाबदेही, वैधता, सत्यनिष्ठा, संवेदनशीलता) पर जाँचें। अंत में किसी एक या अधिक दृष्टिकोण (जैसे उपयोगितावादी, कर्तव्यवादी या गांधीवादी) के आधार पर अपने निर्णय को उचित ठहराएँ, ताकि वह केवल व्यक्तिगत पसंद नहीं, बल्कि तर्कसंगत निर्णय लगे।

5. अंतरात्मा का संकट एवं हितों का टकराव

5.1 अंतरात्मा का संकट (Crisis of Conscience)

🔍 आसान परिभाषा: अंतरात्मा का संकट (Crisis of Conscience)

📘 **परिभाषा:** यह नैतिक दुविधा का एक अत्यंत गहरा व पीड़ादायक रूप है, जिसमें व्यक्ति को अपने आंतरिक नैतिक विश्वासों और बाहरी परिस्थितियों (नौकरी, सुरक्षा, संस्था के प्रति वफादारी) के बीच भीषण मानसिक संघर्ष करना पड़ता है।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे कोई व्यक्ति जानता हो कि उसका करीबी मित्र गलत काम कर रहा है, पर उसे बताने से दोस्ती टूटने का डर हो — यह भीतर से जो बेचैनी व उलझन पैदा होती है, ठीक वैसी ही, पर कहीं अधिक गंभीर स्थिति 'अंतरात्मा का संकट' कहलाती है। 🏠 **उदाहरण:** फार्मा कंपनी रैनबैक्सी के पूर्व कार्यकारी दिनेश ठाकुर ने कंपनी की दवाओं में गुणवत्ता-संबंधी गंभीर गड़बड़ियाँ पाई — व्हिसलब्लोअर बनने पर नौकरी छूटने व जान को खतरे की आशंका थी, पर चुप रहने पर लाखों मरीजों तक घटिया दवाएँ पहुँचतीं। उन्होंने अमेरिकी अधिकारियों को सूचित किया, जिसके बाद 2013 में रैनबैक्सी को दोष स्वीकार कर भारी जुर्माना भरना पड़ा — यह अंतरात्मा के संकट का एक प्रत्यक्ष उदाहरण है।

अंतरात्मा के संकट से उबरने के उपाय

समाधान का स्तर	विधि	उदाहरण
आंतरिक विकास (Inner Development)	ध्यान (Meditation), अध्यात्म, आंतरिक मौन (Inner Silence)।	एप्पल के सह-संस्थापक स्टीव जॉब्स ने 1974 में भारत यात्रा की थी — आध्यात्मिक स्पष्टता की खोज में।
बाह्य ज्ञान (External Knowledge)	गीता, संविधान, कानून व नियमों का गहन अध्ययन।	भौतिक-विज्ञानी जे. रॉबर्ट ओपेनहाइमर ने परमाणु-बम परीक्षण के बाद भगवद्गीता के श्लोकों का सहारा लिया — यह प्रसंग अक्सर उद्धृत किया जाता है, हालाँकि इसकी व्याख्याएँ अलग-अलग रही हैं।
भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI)	आत्म-जागरूकता, सामाजिक-जागरूकता व स्व-प्रबंधन।	भावनात्मक बुद्धिमत्ता से अंतरात्मा व व्यावसायिक कर्तव्य के बीच संतुलन बनता है।
मज़बूत मूल्य-प्रणाली (Value System)	नैतिक मूल्यों को जीवन का आधार बनाना।	गांधीजी — विचार, वाणी व कर्म में एकरूपता।

अंतरात्मा के संकट से उबरने की सीढ़ी



चित्र 7.12: अंतरात्मा के संकट से उबरने की सीढ़ी

5.2 हितों का टकराव (Conflict of Interest)

🔍 आसान परिभाषा: हितों का टकराव (Conflict of Interest)

📘 **परिभाषा:** जब कोई व्यक्ति अपनी सार्वजनिक हैसियत/पद से लिए जाने वाले निर्णयों में अपने निजी निहित स्वार्थ को शामिल कर लेता है, या शामिल करने की स्थिति में आ जाता है, तो उसे 'हितों का टकराव' कहा जाता है — भले ही अंततः कोई गलत निर्णय लिया गया हो या नहीं, स्थिति स्वयं में ही संदेहास्पद बन जाती है।

💡 **आसान भाषा में:** जैसे किसी क्रिकेट चयन-समिति के सदस्य का अपना बेटा भी उसी चयन-ट्रायल में शामिल हो — भले ही वह सदस्य पूरी तरह निष्पक्ष रहने की कोशिश करे, स्थिति स्वयं संदेह पैदा करती है; इसीलिए सही तरीका है 'रिक्तयूज़ल' यानी खुद को उस निर्णय-प्रक्रिया से अलग कर लेना। 🏠 **उदाहरण:** पूर्व गोल्डमैन सैक्स बोर्ड सदस्य रजत गुप्ता को कंपनी की गोपनीय जानकारी का दुरुपयोग कर शेयर-कारोबार (Insider Trading) करने के लिए 2012 में दोषी ठहराया गया, और ICICI बैंक की पूर्व CEO चंदा कोचर को वीडियोकॉन समूह को बैंक-

ऋण मंजूर होने के बदले अपने पति की कंपनी को लाभ मिलने के आरोपों के बीच 2018 में पद छोड़ना पड़ा — दोनों ही मामले 'हितों के टकराव' के प्रत्यक्ष व गंभीर उदाहरण हैं।

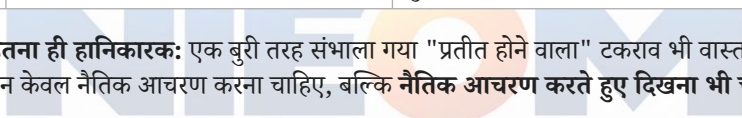
उदाहरण	टकराव का स्वरूप	समाधान/कार्रवाई
रजत गुप्ता — इनसाइडर ट्रेडिंग	गोल्डमैन सैक्स बोर्ड सदस्य होते हुए कंपनी की गोपनीय जानकारी से शेयर-कारोबार किया।	अमेरिकी नियामक (SEC) व न्यायालय की सख्त कार्रवाई, कारावास (2012 में दोषसिद्ध)।
चंदा कोचर — ICICI बैंक	वीडियोकॉन समूह को ऋण मंजूरी के बदले पति की कंपनी को लाभ मिलने का आरोप।	जाँच एजेंसियों की कार्रवाई, 2018 में पद से त्यागपत्र।
क्रिकेट चयन-समिति का उदाहरण	चयनकर्ता का पुत्र स्वयं चयन-ट्रायल में — व्यक्तिगत बनाम व्यावसायिक टकराव।	रिक्यूज़ल (Recusal) — स्वयं को निर्णय-प्रक्रिया से अलग करना।

5.3 हितों के टकराव के तीन रूप — उदाहरणों सहित

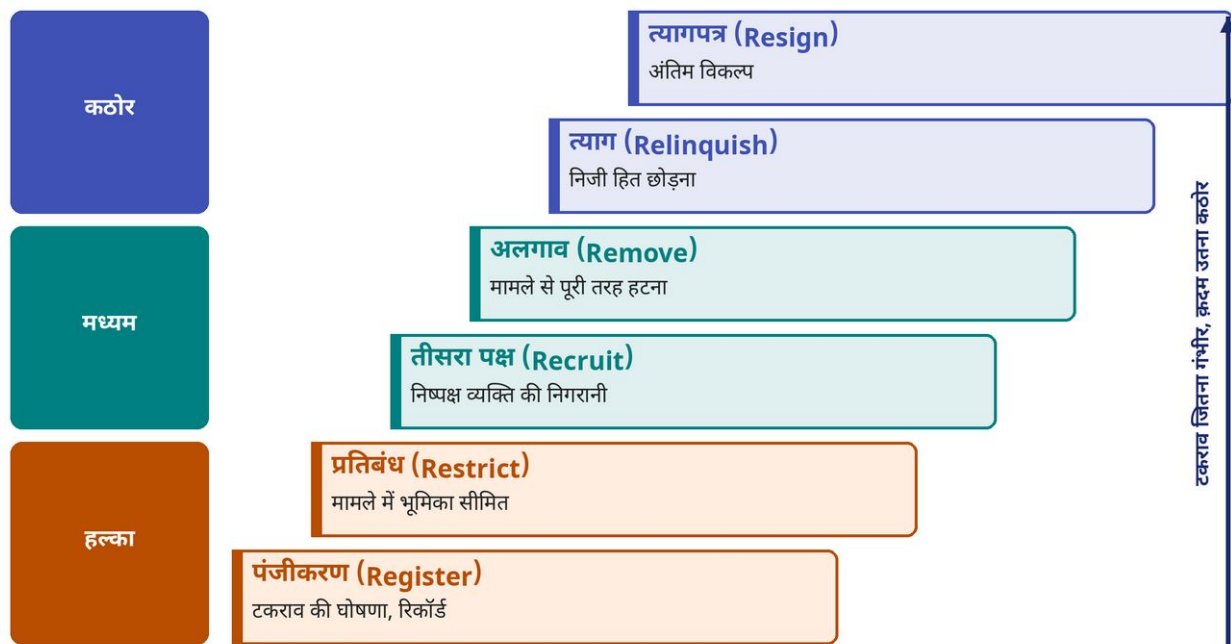
हितों का टकराव एक विशेष प्रकार का मूल्य-संघर्ष है, जिसमें ऐसी परिस्थितियाँ बनती हैं कि प्राथमिक हित (लोकहित) से जुड़े पेशेवर निर्णय पर द्वितीयक हित (निजी लाभ) का अनुचित प्रभाव पड़ने का जोखिम हो। **हितों के टकराव का होना अपने आप में गलत नहीं; व्यक्ति उसे कैसे सुलझाता है, यही उसे नैतिक या अनैतिक बनाता है।**

रूप	अर्थ	उदाहरण
वास्तविक टकराव (Actual)	जब अधिकारी अपना काम करते समय निजी हित से प्रभावित हो सकता है	आदर्श सोसाइटी मामले (युद्ध-विधवाओं के लिए बने फ्लैट रिश्तेदारों को आवंटित होने के आरोप); क्रिकेट बोर्ड के एक पदाधिकारी का साथ-साथ एक लीग टीम का मालिक होना, जिस पर सर्वोच्च न्यायालय तक प्रश्न उठे
प्रतीत होने वाला टकराव (Perceived)	जब अधिकारी ऐसी स्थिति में हो कि वह निजी हित से प्रभावित दिख सकता है	सर्वोच्च न्यायालय के एक न्यायाधीश ने विदेश यात्रा के दौरान उस देश के अधिकारियों के भोज में जाने से मना किया, क्योंकि उस देश के नौसैनिकों से जुड़ा मामला उनके समक्ष था; ब्रिटेन में भारत के उच्चायुक्त एक पुस्तक-विमोचन से उठकर चले गए, क्योंकि वहाँ एक भगोड़ा आर्थिक अपराधी मौजूद था; अखिल भारतीय सेवाओं में अधिकतर अधिकारियों को गृह-राज्य से बाहर का कैडर मिलना
संभावित टकराव (Potential)	जब भविष्य में निजी हित काम को प्रभावित कर सकता है	किसी ग्राहक को उस कंपनी में निवेश की सलाह देना, जो अपने जीवनसाथी की है; एक प्रोफेसर का अपने पद का उपयोग स्वयं लिखी पुस्तक बेचने के लिए करना

प्रतीत होने वाला टकराव भी उतना ही हानिकारक: एक बुरी तरह संभाला गया "प्रतीत होने वाला" टकराव भी वास्तविक टकराव जितना ही नुकसान कर सकता है। लोक सेवकों को न केवल नैतिक आचरण करना चाहिए, बल्कि **नैतिक आचरण करते हुए दिखना भी चाहिए।**


ACADEMY
 New India Education by Omkar Sir

हितों के टकराव का समाधान — 6R सीढ़ी (हल्के से कठोर तक)



चित्र 7.13: हितों के टकराव का समाधान — 6R सीढ़ी (हल्के से कठोर तक)

6R की व्याख्या: 6R नाम इसलिए है, क्योंकि इसके छहों क्रम अंग्रेजी में R से शुरू होते हैं — Register, Restrict, Recruit, Remove, Relinquish और Resign। ये टकराव की गंभीरता के अनुसार हल्के क्रम से शुरू होकर कठोर क्रम तक जाते हैं। (1) **पंजीकरण** — टकराव का विवरण घोषित और दर्ज करना; कम जोखिम वाली स्थिति में अकेला यही पर्याप्त हो सकता है। (2) **प्रतिबंध** — अधिकारी को मामले के उन हिस्सों से दूर रखना, जहाँ उसका निजी हित टकराता है, यानी उसकी भागीदारी सीमित करना। (3) **तीसरे पक्ष की नियुक्ति** — किसी निष्पक्ष, बाहरी व्यक्ति को जोड़ना, जो पूरी प्रक्रिया की निगरानी करे, ताकि निर्णय निष्पक्ष बना रहे। (4) **अलगाव** — अधिकारी का स्वयं या अनुरोध पर मामले से पूरी तरह हटना। (5) **त्याग** — टकराव पैदा करने वाले निजी हित (जैसे शेयर) को छोड़ देना। (6) **त्यागपत्र** — पद से इस्तीफा; यह केवल तभी, जब टकराव किसी और व्यावहारिक तरीके से न सुलझ सके।

कहानी: "समिति की अध्यक्ष और पति की कंपनी" — 6R की परीक्षा

एक नगर निगम की स्वच्छता समिति की अध्यक्ष **रेखा** (काल्पनिक नाम) शहर की नई कचरा-प्रबंधन परियोजना के टेंडरों का मूल्यांकन कर रही थीं। तकनीकी रूप से सबसे मज़बूत बोलियों में से एक जिस कंपनी की थी, फ़ाइल पढ़ते हुए उन्हें पता चला कि उसके निदेशक-मंडल में उनके पति एक महत्वपूर्ण पद पर हैं — और यह बात उन्होंने पहले कभी घोषित नहीं की थी, क्योंकि उन्हें खुद इसकी जानकारी नहीं थी।

समिति के एक सदस्य ने सलाह दी — "मैडम, किसी को पता नहीं है, और वैसे भी यह कंपनी सबसे अच्छी है; आप चुप रहिए, परिणाम तो सही ही आएगा।" रेखा जानती थी कि यह "कोई नुकसान नहीं होगा" वाली भ्रांति है — परिणाम सही हो, तब भी प्रक्रिया पर से भरोसा उठ जाएगा, और भविष्य में सामने आने पर पूरी परियोजना पर प्रश्न लगेगा।

उन्होंने **6R** को क्रम से लागू किया — उसी दिन **लिखित घोषणा** (पंजीकरण) करके आयुक्त को सूचना दी; खुद को इस टेंडर के **मूल्यांकन से पूरी तरह अलग** कर लिया (अलगाव); समिति ने एक **स्वतंत्र तकनीकी विशेषज्ञ** को मूल्यांकन की निगरानी के लिए जोड़ा (तीसरा पक्ष); और उनके पति ने स्वेच्छा से उस अनुबंध-काल के लिए कंपनी के उस विशेष प्रकोष्ठ के निर्णयों से खुद को अलग रखने का शपथ-पत्र दिया। पूरी प्रक्रिया का विवरण नगर निगम की वेबसाइट पर डाला गया।

अंततः वह कंपनी पारदर्शी मूल्यांकन में ही विजेता बनी। एक स्थानीय अख़बार ने जब संबंध का मुद्दा उठाया, तो निगम ने पहले से दर्ज घोषणा और प्रक्रिया का रिकॉर्ड सामने रख दिया — विवाद एक दिन में शांत हो गया। रेखा ने बाद में कहा — "मुझे यह साबित नहीं करना था कि मैं ईमानदार हूँ; मुझे बस ऐसी व्यवस्था बनानी थी, जिसमें मेरी ईमानदारी पर किसी को भरोसा करना ही न पड़े।"

इस कहानी से सीख: हितों का टकराव अपने आप में अपराध नहीं, पर उसे छिपाना नैतिक विफलता है। 6R सूत्र (पंजीकरण, प्रतिबंध, तीसरा पक्ष, अलगाव, त्याग, त्यागपत्र) टकराव की गंभीरता के अनुसार क्रम सुझाता है। समय पर घोषणा और पारदर्शी रिकॉर्ड ही अधिकारी की सबसे बड़ी सुरक्षा है।

◆ **बचाव के उपाय** — स्पष्ट नियम व आचार-संहिता, पारदर्शी प्रणाली, नियमित अंकेक्षण (Audit) तंत्र, तथा मूल्य-विकास कार्यक्रम (Value Development Programs)। अर्थात् पहले से साफ़ नियम हों कि किन स्थितियों में घोषणा ज़रूरी है, कामकाज पारदर्शी हो ताकि कुछ छिपाना कठिन रहे, नियमित अंकेक्षण से गड़बड़ी समय पर पकड़ी जाए, और प्रशिक्षण से अधिकारियों में ऐसे मूल्य विकसित हों कि वे स्वयं आगे बढ़कर टकराव की घोषणा करें।

ध्यान रहे: हितों का टकराव सिद्ध होने के लिए किसी ग़लत काम का वास्तव में होना ज़रूरी नहीं — केवल "ऐसी स्थिति का बनना, जहाँ निजी स्वार्थ सार्वजनिक कर्तव्य को प्रभावित कर सकता हो" ही टकराव है। इसीलिए **रिक्त्यूज़ल** (स्वयं को अलग करना) सबसे प्रभावी निवारक उपाय है।

6. प्रशासन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI in Administration)

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) रूटीन कार्यों को स्वचालित करके तेज़ निर्णय लेने में मदद करती है और डेटा-आधारित सिफारिशें देकर नीति-निर्माण को सुदृढ़ बनाती है। भारत में हाल के वर्षों में प्रशासन के कई क्षेत्रों में AI का उपयोग तेज़ी से बढ़ा है।

6.1 प्रशासन में AI के प्रमुख उपयोग

AI उपकरण / क्षेत्र	कार्य / उपयोग	प्रशासनिक लाभ
स्मार्ट सिटी — ट्रैफ़िक AI	वास्तविक-समय सिग्नल नियंत्रण से यातायात प्रबंधन।	यातायात-जाम कम, आपातकालीन प्रतिक्रिया तेज़।
GST विभाग	AI-आधारित धोखाधड़ी पहचान — कर-चोरी पकड़ना।	राजस्व-संग्रहण में वृद्धि, भ्रष्टाचार में कमी।
CCTNS — AI पुलिसिंग	अपराध व अपराधी ट्रैकिंग — चेहरा-पहचान, पैटर्न-विश्लेषण।	अपराध की पूर्व-भविष्यवाणी, त्वरित प्राथमिकी (FIR)।
सभासार (SabhaSaar, अगस्त 2025)	पंचायती राज मंत्रालय द्वारा लॉन्च — ग्राम सभा बैठकों के ऑडियो/वीडियो से AI द्वारा स्वतः कार्यवृत्त (Minutes) तैयार करना।	पंचायती राज में दक्षता, भाषाई बाधा में कमी।
स्वामित्व योजना (SVAMITVA, अप्रैल 2020)	ड्रोन व AI से ग्रामीण भूमि की मैपिंग व संपत्ति-कार्ड जारी करना।	भूमि-विवाद कम, ग्रामीण क्षेत्रों में ऋण-सुविधा आसान।
गूगल फ़्लड हब (Google Flood Hub)	AI मॉडल — भारत में सर्वप्रथम पटना (बिहार) में 2018 में प्रायोगिक रूप से शुरू, बाद में पूरे भारत में विस्तारित — 7 दिन पहले तक बाढ़ की भविष्यवाणी।	आपदा-पूर्वतैयारी, जीवन-रक्षा।

6.2 AI नैतिकता के छह मूल सिद्धांत

AI नैतिकता एक तेज़ी से विकसित होता क्षेत्र है, जो AI प्रणालियों के डिज़ाइन, विकास, तैनाती और उपयोग से जुड़े नैतिक प्रश्नों की पड़ताल करता है। AI जैसे-जैसे जीवन में गहराई से जुड़ा जा रहा है, यह सुनिश्चित करना सर्वोपरि है कि वह **मानवीय मूल्यों** के अनुरूप हो और सामान्य भलाई में योगदान दे।

AI नैतिकता के छह मूल सिद्धांत

उत्तरदायी AI

हितकारिता AI मानवता के लाभ के लिए हो	अहानिकरता AI हानि न पहुँचाए	स्वायत्तता मानवीय निर्णय-क्षमता का सम्मान
न्याय AI निष्पक्ष और समतापूर्ण हो	पारदर्शिता AI के निर्णय समझाए जा सकें	जवाबदेही AI के कार्यों की स्पष्ट ज़िम्मेदारी

चित्र 7.14: AI नैतिकता के छह मूल सिद्धांत

“ AI दुनिया की सबसे बड़ी समस्याओं को सुलझाने का अभिन्न हिस्सा होगा, पर इसे इस तरह विकसित किया जाना चाहिए कि यह मानवीय मूल्यों को प्रतिबिंबित करे। (AI will be an integral part of solving the world's biggest problems, but it must be developed in a way that reflects human values.) ” — सत्य नडेला के नाम से प्रचलित (Satya Nadella)

6.3 AI में नैतिक मुद्दे (Ethical Issues in AI)

नैतिक मुद्दा	विस्तृत विवरण	उदाहरण
1. निजता (Information Privacy)	डेटा-चोरी (Data Breach) का भारी खतरा — के.एस. पुट्टास्वामी मामले (2017) में सर्वोच्च न्यायालय ने निजता को मौलिक अधिकार घोषित किया, इसलिए तकनीक को निजता का सम्मान करना अनिवार्य है।	2023 में अमेरिकी अस्पताल श्रृंखला HCA Healthcare पर बड़ा साइबर डेटा-चोरी प्रकरण — लगभग 1.1 करोड़ मरीजों का डेटा प्रभावित, अब तक के सबसे बड़े स्वास्थ्य-डेटा उल्लंघनों में से एक।
2. भेदभाव (Algorithmic Bias)	AI डेटा को प्रोसेस करते समय पूर्वाग्रह विकसित कर सकता है, क्योंकि ऐतिहासिक डेटा में ही मौजूदा सामाजिक पूर्वाग्रह छिपे	अमेज़न की आंतरिक भर्ती-AI (अक्टूबर 2018 में उजागर) महिला उम्मीदवारों को अनुचित रूप से

नैतिक मुद्दा	विस्तृत विवरण	उदाहरण
	होते हैं।	कम अंक देती पाई गई — कंपनी ने इस प्रणाली का उपयोग छोड़ दिया।
3. ब्लैक बॉक्स समस्या (Black Box Problem)	AI के निर्णयों को स्पष्ट रूप से समझा पाना कठिन — पारदर्शिता व जवाबदेही की कमी।	कुछ चिकित्सा-AI सिस्टम निदान (Diagnosis) तो सुझाते हैं, पर डॉक्टर उसका पूरा तर्क स्पष्ट नहीं कर पाते — सूचित सहमति (Informed Consent) प्रभावित होती है।
4. अमानवीय प्रशासन (Inhumane Administration)	AI/तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता से करुणा व संवेदनशीलता कमज़ोर पड़ सकती है।	झारखंड के सिमडेगा ज़िले में 2017 में आधार से न जुड़ने के कारण राशन कार्ड रद्द होने से एक आदिवासी बालिका को राशन नहीं मिला और भूख से उसकी मृत्यु हो गई — व्यवस्था तकनीकी रूप से 'सही' थी, पर मानवीय रूप से असफल।
5. डिजिटल विभाजन (Digital Divide)	AI-आधारित सेवाओं का लाभ सभी वर्गों तक समान रूप से नहीं पहुँच पाता।	राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण (NSS, 2017-18) के अनुसार तब ग्रामीण भारत में मात्र लगभग 15% व शहरी भारत में लगभग 42% परिवारों तक ही इंटरनेट पहुँच थी — हालाँकि एक अनुमान के अनुसार हाल के वर्षों में यह अंतर तेज़ी से घटा है और अब ग्रामीण व शहरी, दोनों क्षेत्रों में अधिकांश परिवारों तक इंटरनेट पहुँच चुका है, पर संरचनात्मक असमानता अब भी बनी हुई है।

अन्य नैतिक चुनौती	विवरण	उदाहरण
जवाबदेही और ज़िम्मेदारी	जब AI प्रणाली ग़लती करे या हानि पहुँचाए, तो ज़िम्मेदार कौन — डिज़ाइनर, डेवलपर, तैनात करने वाला या उपयोगकर्ता?	चालक-रहित कार की दुर्घटना; AI चिकित्सा-उपकरण का ग़लत निदान
स्वायत्तता और नियंत्रण	AI जितना स्वायत्त होगा, मानवीय नियंत्रण का प्रश्न उतना बढ़ा; अत्यधिक निर्भरता से मानवीय कौशल और विवेक का क्षय	बिना मानवीय हस्तक्षेप के जीवन-मृत्यु के निर्णय लेने वाले स्वायत्त हथियार
रोज़गार का विस्थापन	स्वचालन से नौकरियाँ जा सकती हैं और आर्थिक असमानता बढ़ सकती है	कारख़ानों में रोबोट; ग्राहक-सेवा का स्वचालन
भ्रामक सूचना और हेरफेर	AI बेहद वास्तविक लगने वाली झूठी सामग्री बना सकता है, जो जनमत को प्रभावित करे और लोकतंत्र को अस्थिर करे	चुनाव के दौरान नेताओं के "डीपफ़ेक" वीडियो का तेज़ी से फैलना
सुरक्षा और दुरुपयोग	AI प्रणालियों पर साइबर हमले; शक्तिशाली AI का निगरानी या साइबर-युद्ध के लिए दुरुपयोग	AI-नियंत्रित बुनियादी ढाँचे की हैकिंग

समाधान के उपाय	अर्थ	उदाहरण
नैतिक AI डिज़ाइन	विकास-चक्र की शुरुआत से ही नैतिक विचारों को जोड़ना	"मूल्य-संवेदी डिज़ाइन" (Value-Sensitive Design)
विनियमन और शासन	AI के विकास और उपयोग के लिए क़ानून, नीतियाँ और अंतरराष्ट्रीय समझौते	डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण अधिनियम, 2023
पारदर्शिता और व्याख्येय AI (XAI)	AI के निर्णयों को मनुष्यों के लिए समझने योग्य बनाना	AI के "भ्रम" (Hallucinations) पर प्रश्न उठाना, मशीन के उत्तर को अचूक सत्य न मानना
मूल्य-संरेखण (Value Alignment)	AI को स्पष्ट रूप से मानवीय मूल्यों और सामाजिक मानदंडों के अनुरूप बनाना	मानवीय निगरानी के साथ निर्णय-सहायक प्रणालियाँ

उद्देश्य AI की प्रगति को रोकना नहीं, बल्कि उसके उत्तरदायी और मानव-केंद्रित विकास को सुनिश्चित करना है। "रेटिंग" और "सामाजिक क्रेडिट" जैसी प्रणालियों पर बनी कुछ प्रसिद्ध काल्पनिक कहानियाँ दिखाती हैं कि जब हर व्यक्ति का मूल्य एक अंक से तय होने लगे, तो लोग दिखावटी व्यवहार करने लगते हैं — यह चेतावनी है कि तकनीक मानवीय आचरण और नैतिकता को किस तरह बदल सकती है।

📖 कहानी: "एल्गोरिदम ने नाम काट दिया" — मशीन की दक्षता और मनुष्य की अंतरात्मा

एक ज़िले में सामाजिक सुरक्षा पेंशन की सूची को "स्वच्छ" करने के लिए एक नई AI-आधारित डी-डुप्लीकेशन प्रणाली (यानी एक ही व्यक्ति के दो-दो बार दर्ज नामों को पहचानकर हटाने वाली प्रणाली) लगाई गई। कुछ ही हफ्तों में प्रणाली ने लगभग चार हजार लाभार्थियों को "संदिग्ध/डुप्लीकेट" बताकर सूची से हटाने की सिफ़ारिश की — इससे सरकार की करोड़ों रुपये की बचत दिखाई जा रही थी। राज्य मुख्यालय से निर्देश आया — "सिफ़ारिश के अनुसार नाम तुरंत हटाएँ।"

ज़िला कलेक्टर अभिषेक (काल्पनिक नाम) ने सूची का एक नमूना खुद देखा। "डुप्लीकेट" बताए गए कई नाम अलग-अलग गाँवों की अलग-अलग विधवाओं के थे, जिनके नाम और पति के नाम संयोग से एक जैसे थे — जैसे "कमला पत्नी रामलाल"। कई बुजुर्गों के फ़िंगरप्रिंट उम्र के कारण मशीन में मेल नहीं खा रहे थे। अभिषेक ने सोचा — "मशीन ने गणना की है, निर्णय नहीं। अगर ये नाम कटे, तो जिन्हें सबसे ज़्यादा ज़रूरत है, वही सबसे पहले भूखे रहेंगे।"

उन्होंने मुख्यालय को लिखित रूप से अवगत कराया कि "मानव-इन-द-लूप" (Human-in-the-loop — यानी मशीन की हर सिफ़ारिश पर अंतिम निर्णय कोई ज़िम्मेदार मनुष्य जाँचकर ले) के बिना नाम नहीं हटाए जाएँगे, और 15 दिन का भौतिक सत्यापन अभियान चलाया — हर संदिग्ध लाभार्थी को सूचना, ग्राम सभा में सूची का पठन, और बायोमेट्रिक विफलता वाले बुजुर्गों के लिए वैकल्पिक पहचान (आँख की पुतली, OTP या अधिकारी-प्रमाणन)। नतीजा चौंकाने वाला था — चार हज़ार में से केवल लगभग 600 वास्तव में डुप्लीकेट या अपात्र निकले; बाक़ी 3,400 पात्र लोग थे।

अभिषेक ने अपनी रिपोर्ट में AI प्रणाली को हटाने की नहीं, बल्कि सुधारने की सिफ़ारिश की — मिलान-नियमों में पिता/पति के नाम के साथ गाँव और जन्म-वर्ष जोड़ना, हर सिफ़ारिश के साथ उसका कारण दिखाना (व्याख्येयता), और किसी भी लाभ को रोकने से पहले अनिवार्य मानवीय सत्यापन। राज्य ने इसे सभी ज़िलों के लिए मानक प्रक्रिया बना दिया। प्रशिक्षण में अभिषेक ने कहा — "AI ने हमें 600 असली गड़बड़ियाँ खोजने की क्षमता दी; अंतरात्मा ने 3,400 निर्दोष लोगों को बचाने की दिशा दी।"

🔑 इस कहानी से सीख: AI प्रशासन की क्षमता बढ़ाता है, पर उसके निर्णयों में पूर्वाग्रह, ग़लत मिलान और "ब्लैक बॉक्स" की समस्या हो सकती है। मानव-इन-द-लूप, व्याख्येयता और हानि से पहले सुनवाई — यही उत्तरदायी AI के तीन व्यावहारिक सूत्र हैं। AI और अंतरात्मा प्रतिस्पर्धी नहीं, पूरक हैं।

🔍 आसान परिभाषा: ब्लैक बॉक्स समस्या (Black Box Problem)

📖 परिभाषा: जब कोई AI प्रणाली इतनी जटिल हो जाए कि उसके अपने डेवलपर्स भी यह ठीक-ठीक न समझा सकें कि उसने कोई विशेष निर्णय किन कारणों से लिया — तो इसे 'ब्लैक बॉक्स समस्या' कहा जाता है। इससे पारदर्शिता व जवाबदेही, दोनों प्रभावित होती हैं।

💡 आसान भाषा में: जैसे कोई अत्यंत जटिल मशीन आपको सिर्फ अंतिम उत्तर बताए, पर यह न बताए कि उसने वह उत्तर कैसे निकाला — आप उस पर आँख मूँदकर भरोसा तो कर सकते हैं, पर 'क्यों सही है' यह सत्यापित नहीं कर सकते। 🏠 उदाहरण: यदि कोई AI प्रणाली किसी नागरिक का ऋण-आवेदन या सरकारी योजना का लाभ अस्वीकार कर दे, और अधिकारी स्वयं यह स्पष्ट न कर पाए कि किस आधार पर अस्वीकृति हुई, तो प्रभावित नागरिक अपील का उचित आधार भी नहीं जान पाएगा — यही 'ब्लैक बॉक्स समस्या' का प्रशासनिक खतरा है।

AI के नैतिक मुद्दों को हमेशा एक सकारात्मक और एक नकारात्मक उदाहरण के साथ देखना चाहिए (जैसे गूगल फ़्लड हब का सकारात्मक उपयोग बनाम झारखंड की आधार-लिंगिंग त्रासदी) — इससे स्पष्ट होता है कि AI न तो पूर्णतः अच्छा है, न पूर्णतः बुरा; असली प्रश्न उसके उत्तरदायी उपयोग (Responsible AI) का है।

7. प्रशासन में अंतरात्मा (Conscience in Administration)

☀️ प्रामाणिक कथन

"नैतिकता/अंतरात्मा के मामलों में बहुमत के नियम का कोई स्थान नहीं है" (In matters of conscience, the law of the majority has no place.) — महात्मा गांधी

अंतरात्मा सही और ग़लत की आंतरिक समझ है। गांधीजी के अनुसार यह 'भीतर की आवाज़' (Voice Within) है, जो नैतिक कम्पास का काम करती है। इमैनुएल कांट ने इसे 'आंतरिक न्यायालय' (Internal Court of Law) कहा — जो बाहरी न्यायाधीशों से भी श्रेष्ठ है, क्योंकि यह हर परिस्थिति में व्यक्ति के साथ रहती है।

7.1 अंतरात्मा निर्णय-निर्माण में कैसे मदद करती है?

भूमिका	विवरण	उदाहरण
धूसर क्षेत्रों में मार्गदर्शन (Grey Areas)	जब नियम पुराने, अस्पष्ट या अत्यधिक कठोर हों, तब अंतरात्मा नैतिक दिशा दिखाती है।	एक ज़िलाधिकारी ने डॉक्टरों की हड़ताल के दौरान स्वयं मरीज़ों को देखने का निर्णय लिया।
नैतिक स्वायत्तता (Moral Autonomy)	बाहरी नियमों की बजाय अपने नैतिक विश्वास से निर्णय लेना।	मार्टिन लूथर किंग जूनियर — "अन्यायपूर्ण कानूनों की अवहेलना करना नैतिक ज़िम्मेदारी है।"
सहानुभूति व करुणा	सिविल सेवकों को औपचारिक कर्तव्य से आगे बढ़कर संवेदनशील होने की प्रेरणा देती है।	केरल की तत्कालीन खाद्य सुरक्षा आयुक्त टी.वी. अनुपमा (2014-15 में) ने खाद्य-पदार्थों में मिलावट के विरुद्ध अंतरात्मा की आवाज़ सुनकर सशक्त कार्रवाई की।

भूमिका	विवरण	उदाहरण
नैतिक साहस (Moral Courage)	प्रतिकूल परिस्थितियों में भी नैतिक मार्ग पर डटे रहना।	भगत सिंह के विषय में व्यापक रूप से यह बताया जाता है कि वे फाँसी से ठीक पहले भी शांत मन से पुस्तक पढ़ते रहे — अंतरात्मा की दृढ़ता का प्रतीक।
हितों के टकराव से बचाव	अंतरात्मा व्यक्ति को स्वार्थ से ऊपर उठने में मदद करती है।	मणिपुर के IAS अधिकारी आर्मस्ट्रॉंग पामे ने (2012 में) क्राउडफंडिंग से 'जनता की सड़क' (People's Road) बनवाई, जब सरकारी तंत्र से मदद नहीं मिली।
आंतरिक जवाबदेही	कोई देख न रहा हो, तब भी सही कार्य करना।	हरियाणा कैडर के IAS अधिकारी अशोक खेमका — बार-बार तबादलों के बावजूद सिद्धांतों पर अडिग रहे (विस्तार हेतु देखें अध्याय 6)।

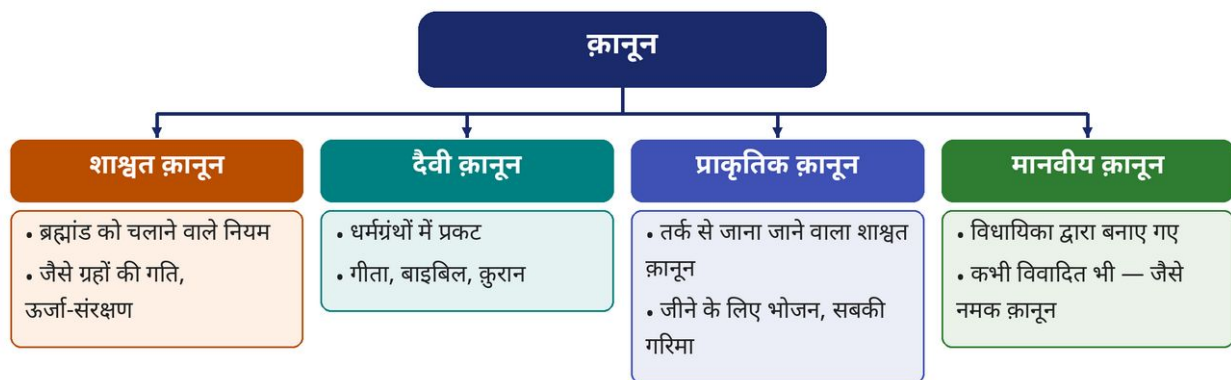
7.2 क़ानून, नियम, विनियम और अंतरात्मा — नैतिक मार्गदर्शन के स्रोत

नैतिक दुविधा सुलझाने में दो मूलभूत समस्याएँ हैं — (1) नैतिक निर्णय के मानकों के मूल स्रोत क्या हैं? और (2) ये मानक किसी विशेष परिस्थिति पर कैसे लागू हों? मनुष्य अपने कर्मों की नैतिकता को दो स्रोतों से परखता है — **एक बाहर है, क़ानून; और दूसरा भीतर है, अंतरात्मा**। दोनों हम पर नैतिक होने का — यानी अच्छा करने और बुरे से बचने का — दायित्व डालते हैं।

कुछ चीज़ें अकेले नैतिक मानक नहीं बन सकतीं: (1) **धर्म** — महामारी से लड़ाई में किसी धार्मिक मान्यता के आधार पर टीके का विरोध निर्णय की कसौटी नहीं बन सकता; (2) **क़ानून** — भारतीय दंड संहिता की धारा 377 (समलैंगिकता को अपराध मानने वाला प्रावधान) डेढ़ सौ वर्ष से अधिक समय तक क़ानून रहा, जिसे 2018 में सर्वोच्च न्यायालय ने आंशिक रूप से असंवैधानिक ठहराया; (3) **सामाजिक मानदंड** — दहेज और बाल-विवाह जैसी प्रथाएँ समाज में लंबे समय तक 'सामान्य' मानी गईं, फिर भी वे अनैतिक थीं; (4) **विज्ञान** — तकनीकी रूप से संभव हर चीज़ नैतिक नहीं होती, जैसे विज्ञान से गर्भ में भ्रूण का लिंग जाँचना संभव है, पर कन्या-भ्रूण हत्या के लिए उसका उपयोग अनैतिक है; (5) **भावनाएँ** — कई बार ग़लत करके भी व्यक्ति को अच्छा महसूस हो सकता है।

क़ानून की नैतिक अवधारणा: संत थॉमस एक्विनास ने क़ानून को परिभाषित किया — **"सामान्य भलाई के लिए तर्क का एक आदेश, जिसे समुदाय की देखभाल करने वाले ने घोषित किया हो।"** लैटिन शब्द **"लेक्स"** (क़ानून) **"लिगारे"** से बना है, जिसका अर्थ है **"बाँधना"** — क़ानून लोगों को कुछ करने के लिए प्रेरित करता है या कुछ करने से रोकता है; यह दायित्व डालता है। एक्विनास के अनुसार विधायक को तर्कसंगत ढंग से कार्य करना चाहिए — जो वह आदेश दे, वह **अच्छा, संभव और न्यायपूर्ण** हो।

थॉमस एक्विनास — क़ानून के चार प्रकार



चित्र 7.15: थॉमस एक्विनास — क़ानून के चार प्रकार

प्राकृतिक क़ानून और सकारात्मक क़ानून: प्राकृतिक क़ानून मानव-स्वभाव पर आधारित है और तर्क से खोजा जा सकता है; इसके दो गुण हैं — **सार्वभौमिकता** (सभी मनुष्यों पर लागू) और **अपरिवर्तनीयता** (सभी स्थानों और समयों पर एक-सा, क्योंकि मानव-स्वभाव नहीं बदलता)। पर प्राकृतिक क़ानून अक्सर अस्पष्ट और सामान्य होता है, इसलिए **सकारात्मक (नागरिक) क़ानून** — जो विधायक अपनी स्वतंत्र इच्छा से बनाकर घोषित करता है — उसे स्पष्ट करते हैं। नागरिक क़ानून कभी प्राकृतिक क़ानून को दोहराते हैं, कभी उसकी सामग्री स्पष्ट करते हैं, और अक्सर ऐसे विषयों पर होते हैं, जिन पर प्राकृतिक क़ानून मौन है।

नागरिक क़ानून का पालन कब अनिवार्य? इसका पालन इन मान्यताओं पर टिका है — क़ानून एक वैध सरकार ने बनाया हो; वह प्राकृतिक क़ानून के विरुद्ध न हो; उसका पालन नैतिक रूप से संभव हो; वह सामान्य भलाई के लिए हो; और उसे उचित रूप से घोषित किया गया हो। यदि इनमें से कोई शर्त न हो, तो नागरिक उस विशेष क़ानून को मानने के लिए नैतिक रूप से बाध्य नहीं — यही **सविनय अवज्ञा** का तर्क है, हालाँकि ऐसी अवज्ञा ग़ैर-क़ानूनी हो सकती है और उसका दंड भुगतना पड़ सकता है (जैसे गांधी का नमक सत्याग्रह)। **जैसे-जैसे शासन में लोकतंत्र बढ़ता है, क़ानून नैतिकता की ओर बढ़ता है, क्योंकि तब क़ानून जनता की सहमति और नैतिक अपेक्षाओं से बनते हैं।**

आधार	क़ानून (Law)	नियम / विनियम (Rule / Regulation)
कौन बनाता है	संवैधानिक रूप से मान्य निकाय — विधायिका	कोई भी सार्वजनिक या निजी निकाय — कार्यपालिका, संगठन, परिवार का मुखिया

आधार	क़ानून (Law)	नियम / विनियम (Rule / Regulation)
स्वरूप	व्यापक ढाँचा	क़ानून के दायरे में ठोस निर्देश
उद्देश्य	सामान्य भलाई	प्रायः विशेष या संगठनात्मक भलाई
क्षेत्र	सामान्यतः विधायक के क्षेत्र तक सीमित	संगठन का सदस्य जहाँ जाए, वहाँ लागू हो सकता है
उल्लंघन पर दंड	कठोर — जैसे सेवा से बर्खास्तगी, कारावास	अपेक्षाकृत हल्का — जैसे निलंबन

नियम का पालन कब नैतिक? बड़े प्रशासन के सुचारु संचालन के लिए नियम बनाए जाते हैं; उनका पालन नैतिक कहा जा सकता है, यदि वे व्यापक लोकहित को दर्शाते हों, दूसरों के हितों को हानि पहुँचाने के उद्देश्य से न हों, किसी विशेष समूह के स्वार्थ के लिए न हों और सामूहिक राय पर आधारित हों।

क़ानून और नियम नैतिक मार्गदर्शक क्यों हैं?	क़ानून और नियमों की सीमाएँ
ये समाज के नैतिक मूल्यों और मानदंडों का संहिताबद्ध रूप हैं — सही-गलत पर सामूहिक सहमति	अधिकतर बलपूर्वक (Coercive) प्रकृति के
व्यवहार का एक सुसंगत और पूर्वानुमेय ढाँचा देते हैं	शक्तिशाली का औज़ार बन सकते हैं — जैसे रंगभेद (Apartheid) के क़ानून
अधिकारों और कल्याण की रक्षा — हानि, भेदभाव और शोषण की सीमाएँ	कभी सांठगांठ वाले हो सकते हैं — इसीलिए न्यायिक समीक्षा ज़रूरी है
जवाबदेही — उल्लंघन पर दंड का भय अनैतिक आचरण रोकता है	सुधारात्मक के बजाय केवल दंडात्मक हो सकते हैं
विवादों के निष्पक्ष, व्यवस्थित समाधान के तंत्र	अन्यायपूर्ण हो सकते हैं — जैसे पुराने जाति-आधारित विधान, औपनिवेशिक क़ानून
जटिल परिस्थितियों में स्पष्टता और मिसालें	समुदाय के नाम पर व्यक्ति की अनदेखी कर सकते हैं
लोकतांत्रिक प्रक्रिया से बने, विद्वानों द्वारा विचारित, जनप्रतिनिधियों द्वारा जाँचे और न्यायपालिका द्वारा परखे — इसलिए वैध और वस्तुनिष्ठ	अस्पष्टता, असंगति और क़ानूनी "छिद्र"

प्रशासन में अंतरात्मा की भूमिका



चित्र 7.16: प्रशासन में अंतरात्मा की भूमिका

7.3 केवल अंतरात्मा पर आधारित निर्णयों की सीमाएँ

- ◆ व्यक्तिगत व्यक्तिपरकता (Subjectivity) — अंतरात्मा व्यक्तिगत भावनाओं व पूर्वाग्रहों से प्रभावित हो सकती है, इसलिए यह सदैव 'वस्तुनिष्ठ रूप से सही' होने की गारंटी नहीं देती।
- ◆ सांस्कृतिक सापेक्षता — सिगमंड फ्रॉयड के अनुसार अंतरात्मा काफी हद तक सामाजिक परिवेश/संस्कारण (Conditioning) की उपज है, इसलिए यह संस्कृतियों के बीच भिन्न हो सकती है।
- ◆ आत्म-धोखा (Self-deception) — कई बार लोग अपनी गलतियों को भी 'अंतरात्मा की आवाज़' बताकर उचित ठहरा सकते हैं।
- ◆ कानूनी व सामाजिक मानदंडों से टकराव — केवल अंतरात्मा के आधार पर कार्य करने से कई बार पेशेवर दायित्वों (Professional Obligations) से टकराव हो सकता है।

7.4 अंतरात्मा — नैतिक मार्गदर्शन का भीतरी स्रोत

अंतरात्मा व्यक्ति की **भीतरी आवाज़** है। व्यक्ति के इरादे, निर्णय और आचरण कई बार प्रवृत्तियों, प्रलोभनों, भावनात्मक बंधनों और इच्छाओं से प्रभावित होते हैं, पर अंतरात्मा इन सबसे ऊपर रहती है। कर्तव्यवादी दृष्टि से अंतरात्मा **बुद्धि का एक निर्णय** है — कोई भावना नहीं, बल्कि किसी विशेष कर्म के अच्छे या बुरे होने पर बुद्धि का व्यावहारिक निर्णय; यह किसी भी कर्म के बारे में भी हो सकता है और होने वाले कर्म के बारे में भी। **क़ानून कर्मों के बारे में सामान्य नियम बताता है; अंतरात्मा उस नियम को किसी विशेष कर्म पर लागू करती है** — यानी क़ानून रंग की तरह तैयार सामग्री देता

है, पर उसे किसी विशेष परिस्थिति रूपी चित्र पर सही जगह लगाने का काम ब्रश की तरह अंतरात्मा करती है; इसीलिए कहा गया है कि **अंतरात्मा कानून के लिए वैसी ही है, जैसे रंग के लिए ब्रश।**

अंतरात्मा नैतिक मार्गदर्शक कैसे बनती है?	अंतरात्मा की आवाज़ सुनने के तरीके
विकल्पों का मूल्यांकन करने वाला सबसे निकटतम स्रोत	जल्दबाज़ी में निर्णय न लें
मनुष्य को तर्क देती है और पशु-प्रवृत्तियों से ऊपर उठती है	निर्णय लें, फिर उसकी समीक्षा करें
भावना नहीं, बल्कि अवचेतन स्तर पर असंख्य गणनाओं के बाद लिया गया तार्किक निर्णय	निर्णय और उसके कारण लिखें
इसका उल्लंघन भीतरी असंगति (Dissonance) पैदा करता है, जो अनैतिक कर्म से रोकता है	एक भरोसेमंद व्यक्ति से बात करें
जीवन-भर व्यक्ति के साथ रहती है; उसके चरित्र और प्रेरणाओं का मूल्यांकन करती है	
अस्पष्ट कानूनों की सर्वोत्तम व्याख्या में और निर्धारित मानदंडों को नैतिक विचारों से जोड़ने में मदद करती है	

लोक सेवक केवल अंतरात्मा पर क्यों निर्भर नहीं रह सकता? (1) अंतरात्मा **व्यक्तिपरक** है; (2) केवल अंतरात्मा के आधार पर लिए गए निर्णय को **कानूनी संरक्षण** नहीं मिलता; (3) अंतरात्मा हर व्यक्ति में समान रूप से **विकसित** नहीं होती। इसलिए निर्णय कानून, नियम और विनियमों द्वारा निर्धारित ढाँचे में, व्यक्तिगत विश्वासों के बजाय तर्क पर आधारित होने चाहिए — जैसे शौचालय बनवाना पर पानी की व्यवस्था न करना तर्कहीन है, चाहे इरादा कितना भी अच्छा हो।

नैतिकता — "भीतरी जवाबदेही": विद्वानों के अनुसार **नैतिकता को आत्म-जवाबदेही या लोक प्रशासकों के आचरण पर "भीतरी अंकुश" (Inner Check)** माना जा सकता है। आत्म-जवाबदेही और बाहरी जवाबदेही (संसदीय प्रश्न, बहस, समितियाँ) एक-दूसरे से जुड़ी हैं — बाहरी जवाबदेही ही भीतरी जवाबदेही पर अपेक्षाएँ डालती है। सर्वोत्तम प्रशासन वह है, जिसमें दोनों का संश्लेषण हो।

कानून बनाम अंतरात्मा — नैतिक मार्गदर्शन के दो स्रोत

कानून (बाहरी)	बनाम	अंतरात्मा (भीतरी)
सामान्य नियम	स्वरूप	विशेष कर्म पर व्यावहारिक निर्णय
स्पष्टता, वैधता, दंड	शक्ति	संवेदनशीलता, धूसर क्षेत्रों में दिशा
अन्यायपूर्ण या अस्पष्ट हो सकता है	सीमा	व्यक्तिपरक, कानूनी संरक्षण नहीं
रंग	उपमा	ब्रश
दोनों का संतुलन	आदर्श	दोनों का संतुलन

चित्र 7.17: कानून बनाम अंतरात्मा — नैतिक मार्गदर्शन के दो स्रोत

अंतरात्मा एक **ज़रूरी पर अपर्याप्त** मार्गदर्शक है; इसे कानून, नियम और संस्थागत जवाबदेही (जैसे ALIR मॉडल) के साथ संतुलित करना ही सर्वोत्तम प्रशासनिक व्यवहार है।

8. AI बनाम अंतरात्मा — विस्तृत तुलना

आज के प्रशासन की सबसे बड़ी वैचारिक चुनौतियों में से एक यह तय करना है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और मानवीय अंतरात्मा (Conscience) — दोनों की भूमिका किस प्रकार एक-दूसरे की पूरक बने, प्रतिस्पर्धी नहीं। नीचे दोनों की विस्तृत तुलना दी गई है।

आयाम	कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI)	अंतरात्मा (Conscience)
प्रकृति (Nature)	एल्गोरिदमिक, तर्क व डेटा-चालित।	नैतिक, करुणा व सत्यनिष्ठा पर आधारित।
गति व पैमाना	तेज़, बड़े पैमाने पर निर्णय — शासन को व्यापक स्तर तक ले जाती है।	धीमी, चिंतनशील — शासन को मानवीय बनाती है।
दृष्टिकोण	डेटा-आधारित वस्तुनिष्ठता (Objectivity)।	मूल्य-आधारित व्यक्तिपरकता (Subjectivity)।
पक्षपात (Bias)	बड़े डेटा से व्यक्तिगत पक्षपात कम होता है, पर ऐतिहासिक/सांस्कृतिक पूर्वाग्रह की संभावना बनी रहती है।	व्यक्तिगत पक्षपात संभव, पर सांस्कृतिक/सामाजिक संदर्भ की गहरी समझ भी देती है।
जवाबदेही	अस्पष्ट — 'ब्लैक बॉक्स समस्या' के कारण ज़िम्मेदारी तय करना कठिन।	स्पष्ट व व्यक्तिगत — नैतिक कर्ता (Moral Agent) स्पष्ट रूप से जवाबदेह होता है।

आयाम	कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI)	अंतरात्मा (Conscience)
सहानुभूति (Empathy)	शून्य — मशीन में वास्तविक भावना नहीं होती।	केंद्रीय तत्व — करुणा व दया का मूल स्रोत।
त्रुटि-सुधार	डेटा अद्यतन (Update) व पुनर्प्रशिक्षण से एल्गोरिदम सुधरता है।	नैतिक शिक्षा, आत्म-चिंतन व ध्यान से अंतरात्मा और सशक्त होती है।
मुख्य समस्याएँ	एल्गोरिदमिक पूर्वाग्रह, ब्लैक बॉक्स, डिजिटल विभाजन, निजता का हनन।	व्यक्तिगत व्यक्तिपरकता, आत्म-धोखा, सांस्कृतिक संस्कारण (Conditioning)।

AI बनाम अंतरात्मा — एक नज़र में

AI	बनाम	अंतरात्मा
एल्गोरिदम, डेटा	प्रकृति	नैतिक, करुणामय
गति, पैमाना	शक्ति	विवेक, संवेदना
डेटा का पूर्वाग्रह	पक्षपात	व्यक्तिगत पूर्वाग्रह
अस्पष्ट (ब्लैक बॉक्स)	जवाबदेही	स्पष्ट, व्यक्तिगत
क्षमता बढ़ाता है	भूमिका	दिशा देती है

चित्र 7.18: AI बनाम अंतरात्मा — एक नज़र में

☀ अध्याय का केंद्रीय भाव

AI क्षमता (Capacity) बढ़ाता है — बड़े पैमाने पर, तेज़ी से निर्णय लेने की शक्ति देता है। अंतरात्मा दिशा (Direction) देती है — यह तय करती है कि उस शक्ति का उपयोग किस नैतिक उद्देश्य के लिए हो। AI एक 'प्रवर्धक' (Amplifier) की तरह है, अंतरात्मा एक 'दिशा-सूचक यंत्र' (Compass) की तरह — दोनों मिलकर ही एक आदर्श, तेज़ पर मानवीय प्रशासन का निर्माण करते हैं।

AI और अंतरात्मा — "या" नहीं, "और": दोनों प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि पूरक हैं। **ह्यूमन-इन-द-लूप** — यानी हर महत्वपूर्ण AI निर्णय को अंततः मानवीय अंतरात्मा की समीक्षा से गुज़ारना — यही आदर्श संतुलन है।

9. भारत AI शासन दिशानिर्देश 2025 (India AI Governance Guidelines) एवं आगे की राह

नवंबर 2025 में इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) द्वारा 'भारत AI शासन दिशानिर्देश' (India AI Governance Guidelines) जारी किए गए — ये भारत में सुरक्षित, विश्वसनीय व नैतिक AI विकास हेतु मार्गदर्शक ढाँचा प्रस्तुत करते हैं। इसके तहत एक 'AI गवर्नेंस समूह' (AI Governance Group - AIGG) व एक 'भारतीय AI सुरक्षा संस्थान' (IndiaAI Safety Institute - AISI) जैसी संस्थाओं की भूमिका तय की गई है, जो सुरक्षित व भरोसेमंद AI विकास सुनिश्चित करेंगे।

9.1 सुरक्षित AI के 7 मार्गदर्शक सूत्र (7 Sutras)

क्र.	सूत्र	अर्थ एवं महत्व
1	विश्वास ही आधार है (Trust is the Foundation)	AI प्रणाली पर जनता का विश्वास — पारदर्शी व विश्वसनीय होनी चाहिए।
2	जन-प्राथमिकता (People First)	तकनीक मनुष्य की सेवा करे, उस पर नियंत्रण न करे — मानवीय गरिमा सर्वोपरि।
3	प्रतिबंध नहीं, नवाचार (Innovation over Restraint)	अत्यधिक कठोर विनियमन से नवाचार न रुके — नियंत्रित प्रयोग (Regulated Sandbox) को प्रोत्साहन।
4	निष्पक्षता व समानता (Fairness and Equity)	AI सभी वर्गों के लिए समान रूप से उपलब्ध व निष्पक्ष हो — कोई भेदभाव नहीं।
5	जवाबदेही (Accountability)	AI प्रणाली की हर गड़बड़ी हेतु स्पष्ट उत्तरदायित्व-शृंखला (Responsibility Chain) निर्धारित हो।
6	अभिकल्पना से ही समझने योग्य (Understandable by Design)	AI के निर्णय आरंभ से ही व्याख्या-योग्य (Explainable) बनाए जाएँ — 'ब्लैक बॉक्स' न हों।
7	सुरक्षा, लचीलापन (प्रतिघात-क्षमता) व	AI से भौतिक/डिजिटल क्षति न हो, और यह दीर्घकाल में टिकाऊ रहे — सुरक्षा-प्रथम

क्र.	सूत्र	अर्थ एवं महत्व
	संधारणीयता (Safety, Resilience and Sustainability)	दृष्टिकोण।

सुरक्षित AI के 7 सूत्र — भारत AI शासन दिशानिर्देश

7 सूत्र



चित्र 7.19: सुरक्षित AI के 7 सूत्र — भारत AI शासन दिशानिर्देश

9.2 आगे की राह — संतुलित दृष्टिकोण (Way Forward)

- ◆ पूरकता (Complementarity) — AI प्रशासनिक क्षमता का 'प्रवर्धक' है, अंतरात्मा शासन-व्यवस्था का 'दिशा-सूचक' है — दोनों को साथ चलना है, प्रतिस्पर्धा में नहीं।
- ◆ ह्यूमन-इन-द-लूप (Human-in-the-loop) — हर महत्वपूर्ण AI-निर्णय को अंतिम रूप से मानवीय अंतरात्मा/समीक्षा के फ़िल्टर से गुज़ारना अनिवार्य होना चाहिए।
- ◆ एल्गोरिदम का नैतिक अंकेक्षण (Ethical Audit of Algorithms) — हर AI प्रणाली का नियमित रूप से नैतिक व निष्पक्षता-मूल्यांकन ज़रूरी है।
- ◆ राष्ट्रीय AI रणनीति — नैतिक AI विकास (Ethical AI Development) पर सतत बल देना, ताकि तकनीकी प्रगति व नैतिक ज़िम्मेदारी साथ-साथ चलें।

AI का योगदान	अंतरात्मा का योगदान
◆ डेटा-आधारित निर्णय — व्यक्तिगत पक्षपात में कमी।	◆ करुणा व मानवीय स्पर्श (Empathy and Human Touch)।
◆ बड़े पैमाने पर व तेज़ क्रियान्वयन (Large Scale Implementation)।	◆ धूसर क्षेत्रों (Grey Areas) में नैतिक मार्गदर्शन।
◆ 24x7 सेवा (जैसे AI चैटबॉट्स)।	◆ नैतिक साहस — जोखिम उठाने का सामर्थ्य।
◆ पैटर्न पहचान — धोखाधड़ी व अपराध का पता लगाना।	◆ सांस्कृतिक संदर्भ की गहरी समझ व आंतरिक जवाबदेही।

9.3 नैतिक प्रबंधन और नैतिकता का प्रबंधन

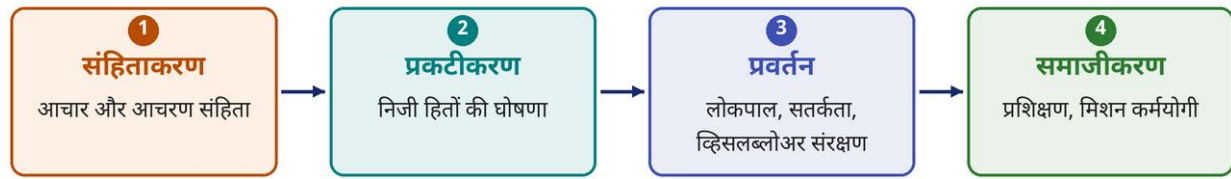
नैतिक प्रबंधन (Ethical Management) का अर्थ है — मूल्यों को प्रशासन के एक महत्वपूर्ण आयाम के रूप में स्वीकार करना और उन्हें संस्था के हर घटक में शामिल करना। प्रबंधन की हर अवस्था (POSDCORB — लोक प्रशासन के विद्वान लूथर गुलिक द्वारा बताए गए प्रबंधन के सात कार्यों का संक्षिप्त रूप: नियोजन, संगठन, कर्मचारी-नियुक्ति, निर्देशन, समन्वय, प्रतिवेदन और बजट) में एक मूल्य जुड़ना चाहिए — **नियोजन** में समावेश और स्थिरता, **संगठन** में निष्पक्षता, **कर्मचारी-नियुक्ति** में तार्किक नियम, **निर्देशन** में लोकतांत्रिकता, **समन्वय** में सहानुभूति, **प्रतिवेदन** में वस्तुनिष्ठता और सत्य, और **बजट** में "अज्ञानता का आवरण" (रॉल्स का विचार — बजट ऐसे बनाया जाए, मानो बनाने वाले को पता ही न हो कि वह स्वयं समाज के किस वर्ग में होगा, ताकि सबसे कमज़ोर वर्ग का भी पूरा ध्यान रहे)। नैतिक प्रबंधन के अभाव में कई बुराइयाँ पनपती हैं — अधिकारी लक्ष्य भूलकर केवल साधनों और प्रक्रियाओं में उलझ जाते हैं (साधन-केंद्रितता), जनता की सेवा की भावना ख़त्म होने लगती है, कमज़ोर और गरीब वर्ग व्यवस्था से कटकर अलग-थलग पड़ जाते हैं, नैतिक भ्रष्टाचार बढ़ता है और हर बात छिपाने वाली गोपनीयता की संस्कृति बन जाती है।

नैतिकता का प्रबंधन (Management of Ethics) का अर्थ है — ऐसे उपकरण और तकनीकें बनाना और उपयोग करना, जो मूल्यों को प्रशासन, कर्मचारियों और नागरिकों के आचरण से जोड़ें — जैसे **लोकपाल**, **व्हिसलब्लोअर संरक्षण**, **आचार संहिता और आचरण संहिता**, और **पेशेवर समाजीकरण (प्रशिक्षण)**। किसी भी नैतिक आचरण-ढाँचे में ये तत्व होने चाहिए — नैतिक मानदंडों का संहिताकरण; लोकहित और निजी लाभ के टकराव से बचने के लिए निजी हितों का प्रकटीकरण; संहिता लागू करने का तंत्र; और किसी को पद के योग्य या अयोग्य ठहराने के मानदंड।

परंपरागत मूल्य जो आज भी प्रासंगिक हैं	जिनकी प्रासंगिकता घटी है	नए उभरते मूल्य
ईमानदारी, निष्पक्षता, वस्तुनिष्ठता	केवल प्रक्रियात्मक शुद्धता	लचीलापन, नवाचार
गैर-पक्षपात, समानुभूति	अत्यधिक केंद्रीकरण	प्रतिस्पर्धा, टीम-भावना
लोक सेवा के प्रति समर्पण, वैधता	अनावश्यक गोपनीयता	जोखिम उठाने का साहस, दक्षता

नए मूल्यों की ज़रूरत क्यों? मैक्स वेबर की परंपरागत नौकरशाही के मूल्य — तटस्थता, वस्तुनिष्ठता, निष्पक्षता, नियम-केंद्रितता, पदानुक्रम, गुमनामी और विशेषज्ञता — आज अकेले पर्याप्त नहीं, क्योंकि सरकारी संस्थाओं की भूमिका **नियामक से सुविधादाता** की ओर, **लक्ष्य नियंत्रण से विकास** की ओर बदल रहा है; शासन में सूचना-प्रौद्योगिकी का प्रवेश हुआ है; विशेषज्ञ प्रशासन की माँग बढ़ी है; और निजी क्षेत्र के प्रबंधन-सिद्धांतों को लोक प्रशासन में लाने वाले **"नव लोक प्रबंधन"** की ज़रूरत है।

नैतिकता का प्रबंधन — चार स्तंभ



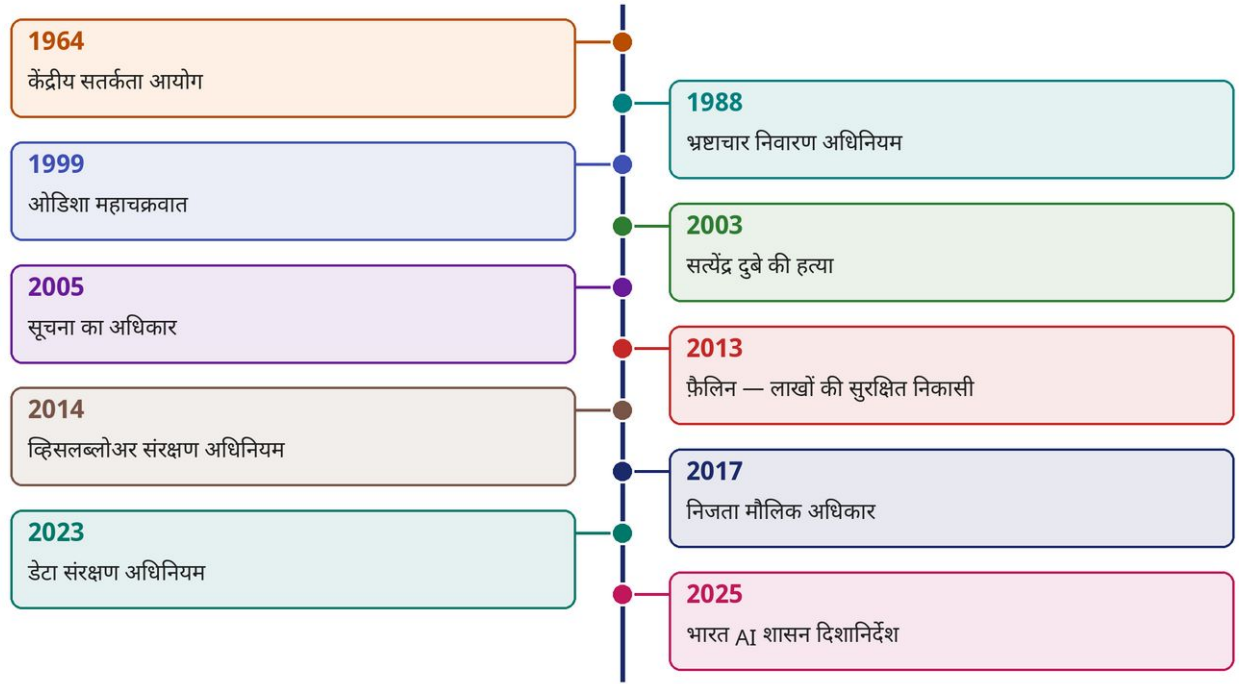
चित्र 7.20: नैतिकता का प्रबंधन — चार स्तंभ

सार-सूत्र: किसी भी दुविधा में सबसे पहले दुविधा के प्रकार को पहचानें, फिर दोनों पक्षों में दाँव पर लगे मूल्य स्पष्ट करें, उसके बाद निर्णय को ALIR मॉडल की चार कसौटियों पर परखें, और अंत में उसे किसी नैतिक दृष्टिकोण (उपयोगितावादी, कर्तव्यवादी या गांधीवादी) से न्यायोचित ठहराएँ। 21 दुविधाओं में से सबसे अधिक उद्धृत उदाहरण हैं — सिद्धांत बनाम आत्म-संरक्षण (सत्येंद्र दुबे), वफ़ादारी बनाम ईमानदारी (दिनेश ठाकुर), स्वायत्तता बनाम जवाबदेही (सतीश धवन-कलाम)। पूरे अध्याय का सार एक पंक्ति में: **"AI क्षमता बढ़ाता है, अंतरात्मा दिशा देती है — दोनों का संतुलन ही आदर्श प्रशासन की कुंजी है।"**

10. नैतिक दुविधाएँ एवं AI — ऐतिहासिक यात्रा

वर्ष / संदर्भ	विषय / घटना
1962	के. संधानम समिति गठित — भ्रष्टाचार-रोधी ढाँचे की सिफ़ारिश हेतु।
1964	संधानम समिति की रिपोर्ट के आधार पर केंद्रीय सतर्कता आयोग (CVC) की स्थापना।
1973	सत्येंद्र दुबे (IES) का जन्म — बिहार।
1974	एप्पल के सह-संस्थापक स्टीव जॉब्स की भारत यात्रा — आध्यात्मिक स्पष्टता की खोज में।
1988	भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम (Prevention of Corruption Act) पारित।
27 नवंबर 2003	सत्येंद्र दुबे की हत्या — राजमार्ग घोटाला उजागर करने की क्रीम — सिद्धांत बनाम आत्म-संरक्षण का प्रतीक उदाहरण।
2005	सूचना का अधिकार अधिनियम (RTI Act) पारित — गोपनीयता बनाम पारदर्शिता की दुविधा का एक संस्थागत समाधान।
2012	रजत गुप्ता — गोल्डमैन सैक्स इनसाइडर ट्रेडिंग मामले में दोषसिद्धि।
2013	रैनबैक्सी ने अमेरिकी अधिकारियों के समक्ष दोष स्वीकार किया — दिनेश ठाकुर की व्हिसलब्लोइंग का परिणाम।
2017	के.एस. पुट्टास्वामी मामले — सर्वोच्च न्यायालय ने निजता को मौलिक अधिकार घोषित किया; इसी वर्ष झारखंड के सिमडेगा ज़िले में आधार-लिंगिंग के अभाव में राशन कार्ड रद्द होने से एक आदिवासी बालिका की भूख से मृत्यु।
2018	अमेज़न की भर्ती-AI में लैंगिक पूर्वाग्रह उजागर (अक्टूबर); मिशन सत्यनिष्ठा लॉन्च — भारतीय रेलवे (जुलाई); चंदा कोचर का ICICI बैंक से इस्तीफ़ा; गूगल फ़्लड हब का पटना (बिहार) में प्रायोगिक शुभारंभ।
2020	स्वामित्व (SVAMITVA) योजना का शुभारंभ (अप्रैल); गूगल फ़्लड हब का पूरे भारत में विस्तार।
2023	डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण अधिनियम (DPDP Act) पारित; दिसंबर 2023 में निरसन और संशोधन अधिनियम, 2023 द्वारा कई पुराने कानून निरस्त; अमेरिकी अस्पताल श्रृंखला HCA Healthcare का बड़ा डेटा-चोरी प्रकरण।
2025	सभासार (SabhaSaar) का शुभारंभ — पंचायती राज मंत्रालय (अगस्त); भारत AI शासन दिशानिर्देश जारी — MeitY (नवंबर)।

नैतिक दुविधाएँ और शासन — प्रमुख पड़ाव



चित्र 7.21: नैतिक दुविधाएँ और शासन — प्रमुख पड़ाव

☀ अध्याय का सार — एक पंक्ति में

प्रशासन में नैतिक चिंताएँ व दुविधाएँ अपरिहार्य हैं — असली परीक्षा यह नहीं कि दुविधा आए या न आए, बल्कि यह है कि उसे ALIR मॉडल जैसे व्यवस्थित ढाँचे व अपनी अंतरात्मा की मदद से कैसे सुलझाया जाए; और जैसे-जैसे AI प्रशासन का हिस्सा बनती जा रही है, यह और भी ज़रूरी होता जा रहा है कि उसकी गति व पैमाने को मानवीय अंतरात्मा की दिशा व करुणा से संतुलित रखा जाए।

बोनस: उत्तर-लेखन अभ्यास (मॉडल प्रश्न और उत्तर)

प्रश्न 1: नैतिक दुविधा (Moral Dilemma) से क्या तात्पर्य है? क्या नैतिक संघर्ष की स्थिति में व्यक्तिगत नैतिकता को व्यावसायिक नैतिकता पर प्राथमिकता देनी चाहिए?

उत्तर: नैतिक दुविधा वह स्थिति है जब दो या अधिक नैतिक मूल्यों के बीच टकराव हो और किसी एक को दूसरे की कीमत पर चुनना पड़े — जैसे किसी अधिकारी के सामने संस्था के प्रति वफ़ादारी (व्यावसायिक नैतिकता) और जनहित को उजागर करने की ईमानदारी (व्यक्तिगत नैतिकता) आमने-सामने आ जाएँ।

◆ **व्यावसायिक नैतिकता का महत्व:** संस्थागत अनुशासन, गोपनीयता व टीम-भावना बनाए रखने के लिए आवश्यक है — बिना इसके कोई भी संगठन कार्य नहीं कर सकता।

◆ **व्यक्तिगत नैतिकता की प्राथमिकता कब:** जब व्यावसायिक निष्ठा जनहित, कानून या मौलिक मानवीय मूल्यों के सीधे विरुद्ध जाए — जैसे सत्येंद्र दुबे व दिनेश ठाकुर के मामलों में, जहाँ चुप रहना लाखों लोगों को नुकसान पहुँचाता।

◆ **संतुलन का सिद्धांत:** ब्रिटिश दार्शनिक डब्ल्यू.डी. रॉस का 'प्रथम-दृष्टया कर्तव्य' (Prima facie duty) सिद्धांत यहाँ मार्गदर्शक है — इसके अनुसार कुछ कर्तव्य सामान्यतः निभाने ही चाहिए, पर किसी अधिक महत्वपूर्ण कर्तव्य से टकराने पर वे पीछे हट सकते हैं — सामान्यतः व्यावसायिक निष्ठा निभाई जाए, पर जब वह किसी भारी नैतिक अनिष्ट (गंभीर सार्वजनिक क्षति) को ढकने का साधन बने, तो व्यक्तिगत नैतिकता (सत्य/जनहित) को प्राथमिकता मिलनी चाहिए — पर यह निर्णय उचित संस्थागत माध्यम (जैसे व्हिसलब्लोअर सुरक्षा तंत्र) से लिया जाए, मनमाने ढंग से नहीं।

निष्कर्ष: नैतिक संघर्ष की स्थिति में कोई एक सिद्धांत सदैव 'सही' नहीं होता — पर जब व्यावसायिक वफ़ादारी जनहित के मौलिक हनन का बहाना बन जाए, तब व्यक्तिगत नैतिकता व सत्यनिष्ठा को प्राथमिकता देना ही एक जागरूक लोक सेवक का कर्तव्य है, भले ही उसकी व्यक्तिगत क्रीम कितनी भी बड़ी क्यों न हो।

प्रश्न 2: प्रशासनिक निर्णय-निर्माण में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और अंतरात्मा (Conscience) की भूमिका का तुलनात्मक विश्लेषण करें।

उत्तर: आधुनिक प्रशासन में AI व अंतरात्मा दोनों की अपनी विशिष्ट व परस्पर-पूरक भूमिका है — दोनों एक-दूसरे का विकल्प नहीं, बल्कि सहयोगी हैं।

◆ **AI की भूमिका:** डेटा-आधारित, तेज़ व बड़े पैमाने के निर्णयों में सहायक — जैसे गूगल फ़्लड हब से आपदा-पूर्वानुमान, या GST विभाग में धोखाधड़ी-पहचान। पर इसकी सीमाएँ भी स्पष्ट हैं — एल्गोरिदमिक पूर्वाग्रह (अमेज़न भर्ती-AI उदाहरण) व 'ब्लैक बॉक्स समस्या' जैसी चुनौतियाँ।

◆ **अंतरात्मा की भूमिका:** धूसर क्षेत्रों (Grey Areas) में नैतिक मार्गदर्शन व करुणा प्रदान करती है — जैसे झारखंड की घटना में यह स्पष्ट हुआ कि तकनीकी रूप से 'सही' व्यवस्था भी मानवीय अंतरात्मा की अनुपस्थिति में विनाशकारी सिद्ध हो सकती है।

◆ **पूरकता का सिद्धांत:** भारत AI शासन दिशानिर्देश 2025 (India AI Governance Guidelines) के 'जन-प्राथमिकता' (People First) सूत्र में मानवीय निगरानी पर बल दिया गया है; इसी 'ह्यूमन-इन-द-लूप' (Human-in-the-loop) सिद्धांत के अनुसार, हर महत्वपूर्ण AI-सुझाव को अंतिम रूप से मानवीय अंतरात्मा की समीक्षा से गुज़रना चाहिए।

निष्कर्ष: AI प्रशासनिक क्षमता (Capacity) का प्रवर्धक है, जबकि अंतरात्मा उस क्षमता को नैतिक दिशा (Direction) देने वाला दिशा-सूचक यंत्र है — भविष्य का आदर्श प्रशासन वही होगा जो तकनीकी दक्षता (Smart) के साथ-साथ न्यायपूर्ण व मानवीय (Just and Humane) भी हो।

